www.thearyasamaj.org

।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का प्रबल उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2011-13

दयानन्दाब्द १८६,
शक सं. १९३४,
सृष्टि सं.- १९६०८५३११३

वर्ष-12 | अंक-11 | भाद्रपद शु. १२ से आश्विन कृ. ११ सं. २०७० वि. | 16 से 30 सितम्बर 2013 | अमरोहा, उ.प्र. | पृ. 12 | प्रति-5/-

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में बनेगा

अन्तरराष्ट्रीय प्रशिक्षण एवं शोध केन्द्र

देवराज आर्य
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2012 में प्रस्तावित बहुद्देश्यीय केन्द्र की स्थापना करने का संकल्प सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की गुरुकुल कांगड़ी में सम्पन्न ऐतिहासिक बैठक में एक प्रस्ताव द्वारा स्वीकार किया गया। बैठक में आर्यसमाज के उपयोग में आने वाले मानव संसाधन को प्रशिक्षित करने के साथ-साथ आर्यसमाज से संबन्ध रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रचार, संगठन एवं रिकार्ड संबन्धी समस्त आवश्यकताओं को एक ही स्थान पर परिपूर्ण करने की योजना का प्रस्ताव भी पारित किया गया।

सार्वदेशिक सभा की दो दिन तक चली इस विचारगोष्ठी एवं अंतरंग बैठक में इसके संबन्ध में व्यापक चर्चा हुई। सभी सदस्यों ने इस संबन्ध में अपने-अपने सुझाव व विचार रखे। मूल प्रस्ताव जो कि सार्वदेशिक सभा द्वारा पूर्व में बनायी गयी एक समिति द्वारा प्रस्तुत किया गया था, जिसकी दो दिन की बैठक इसी संबन्ध में इन्दौर में सम्पन्न हुई थी, प्रस्तुत प्रस्ताव पर सबने सुझाव रखे और कहा कि यह प्रशिक्षण केन्द्र आर्यसमाज की आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

बैठक में इस प्रस्ताव को स्वीकृति देने के साथ ही एक ऐसी समिति के गठन का प्रस्ताव भी सभा मंत्री श्रीप्रकाश आर्य की तरफ से प्रस्तुत किया गया कि इस कार्य को बढ़ाने हेतु विस्तृत प्रस्ताव, कार्य विवरण, उपयोगिता, आवश्यकता, संभावित लाभ तथा इस वृहद योजना के संचालन के संबन्ध में अपने अन्तिम सुझाव तथा इसके निर्माण के स्थान आदि के संबन्ध में अन्तिम प्रस्ताव करने हेतु एक समिति का गठन किया जाये। यह समिति दो महीनों के अन्दर अन्तिम प्रस्ताव प्रस्तुत करेगी। सभा प्रधान आचार्य बलदेव ने इस निमित्त बनने वाली इस समिति के अध्यक्ष के रूप में महाशय धर्मपाल जी से समिति की अध्यक्षता स्वीकार करने का अनुरोध

शेष पृष्ठ ११ पर....

रूटा के त्रैवार्षिक निर्वाचन में विजयी पदाधिकारी प्रसन्न मुद्रा में- केसरी।

केसरी के सम्पादक बने विश्वविद्यालय शिक्षक संघ के अध्यक्ष

आर्य उपप्रतिनिधि सभा के भी अध्यक्ष हैं डॉ० अशोक आर्य

रवित विश्नोई
अमरोहा।

महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय शिक्षक संघ (रूटा), बरेली के 25 अगस्त को जे.एस. हिन्दू (पी.जी.) कालेज में सम्पन्न त्रैवार्षिक निर्वाचन में आर्यावर्त केसरी के प्रधान सम्पादक व आर्य उपप्रतिनिधि सभा, अमरोहा के प्रधान डॉ. अशोक कुमार आर्य को शिक्षकों ने आम मतदान द्वारा भारी मतों से विजयी बनाया। डॉ. आर्य ने 315 मत प्राप्त किये, जबकि उनके निकटतम प्रतिद्वन्द्वी डॉ. राजकुमार सोनकर को 84, तथा डॉ0 राजेश सिंह चौहान को केवल 10 मत प्राप्त करके ही संतोष करना पड़ा। ज्ञातव्य है कि विश्वविद्यालय के इतिहास में आम मतदान द्वारा यह पहला चुनाव था। इससे पूर्व यह चुनाव डेलीगेट पद्धति से होता था।

महामंत्री पद पर डॉ. दानवीर सिंह यादव 286 मत प्राप्त करके विजयी घोषित हुए। डॉ. ए.के. अग्रवाल को शिक्षकों ने 287 मत देकर संगठन मंत्री/कोषाध्यक्ष पद के लिए विजयी बनाया। उन्होंने अपने प्रतिद्वन्द्वी डॉ. सी.पी. पाण्डेय को 177 मतों से पराजित किया।

इस अवसर पर डॉ. चारु मेहरोत्रा- 292, डॉ. अभय कुमार मीतल- 261, डॉ. सोमपाल सिंह- 260, तथा डॉ. राकेश कुमार- 248 मत प्राप्त कर उपाध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए। रूटा के इस त्रैवार्षिक चुनाव में डॉ. राका शर्मा को 282, डॉ. भारती चौहान को 253, व मोहसिन हसन खां को 224 मत हासिल हुए। इन तीनों को संयुक्त मंत्री पद पर चुना गया।

इस अवसर पर डॉ. मनवीर सिंह व डॉ. नवीश कुमार प्रान्तीय प्रतिनिधि (फुपुक्टा डेलीगेट) पद

शेष पृष्ठ ०७ पर......

१६ कलाओं के मर्मज्ञ थे श्रीकृष्ण

नई दिल्ली (सुमन कुमार वैदिक)। करोलबाग क्षेत्र के चार आर्यसमाजों ने संयुक्त रूप से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर अजमल खां पार्क में प्रात: यज्ञ किया। यज्ञ के पश्चात् डॉ. शिवकुमार शास्त्री ने कहा कि महाभारत के पश्चात् हमारे गौरवमयी साहित्य को नष्ट किया गया। साहित्य और ऐतिहासिक पुरुषों को कलुषित करने के लिए अनेक प्रक्षेप जोड़े गये। योगिराज श्रीकृष्ण के चरित्र पर सबसे अधिक आक्रमण किये गये, जिन्हें सही करना आज की आवश्यकता है। आर्यसमाज देवनगर के प्रधान पं. नफेसिंह देशवाल ने कहा कि महाभारत इत्यादि ग्रन्थों में जो प्रक्षेप किये गये, उससे अनेक अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णनों के कारण महाभारत और रामायण को लोग कल्पना मात्र मानने लगे थे, किंतु ब्रह्म. कृष्णदत्त जी के साहित्य को पढ़ने से अनेक गुत्थियां सहज ही सुलझ गयी हैं। उन्होंने अपने प्रवचनों में षोडश कलाओं, द्रोपदी चीरहरण एवं योगेश्वर श्री कृष्ण के विराट स्वरूप की व्याख्या करते हुए कहा कि जो कहते हैं कि श्रीकृष्ण सोलह हजार गोपियों में रमण करते थे, उन्होंने वास्तव में श्रीकृष्ण को जाना नहीं। उन्हें सोलह हजार वेद की ऋचाएं कण्ठस्थ थीं। वे उन ऋचाओं में सदैव मुग्ध रहते थे। सोलह कलाओं की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि चार कलाएं चार दिशाओं (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण) का, चार कलाएं पंच महाभूतों (पृथ्वी, वायु, अन्तरिक्ष, समुद्र) की, चार कलाएं अग्नि (सूर्य, चन्द्र, अग्नि, विद्युत) की, चार कलाएं इन्द्रियों (मन, चक्षु, श्रोत्र, घ्राण) की हैं, जिन्हें योगिराज श्रीकृष्ण अच्छी प्रकार जानते थे। यज्ञ का संयोजन आचार्य अमोल शास्त्री एवं जयप्रकाश शास्त्री ने संयुक्त रूप से किया। स्त्री आर्यसमाज की राजेन्द्रा अवरोल ने कहा कि हमें मिलकर उत्सव करने चाहिए।

मारखम, टोरंटो में १०८ कुण्डीय यज्ञ कराते आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री एवं उपस्थित यजमान व अन्य

विदेश में पहली बार हुआ १०८ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया
मारखम, टोरंटो (कनाडा)।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्व में विदेश में पहली बार 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन हुआ। यह आयोजन कनाडा के आर्यसमाज मारखम, टोरंटो के विशाल प्रांगण में बड़ी श्रद्धा के साथ सम्पन्न हुआ। भारी संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं ने जहां गायत्री के महत्व को समझा, वहीं यज्ञ की महिमा को भी आत्मसात किया।

अध्यात्म पथ के संपादक एवं प्रख्यात लेखक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने विशाल जन-समुदाय को प्रभावपूर्ण शैली में सम्बोधित करते हुए कहा कि यज्ञ से पर्यावरण की शुद्धि, सभी शुभकामनाओं की पूर्ति, दान, संगतिकरण और देवपूजा से प्रकृति, ईश्वर से निकटता, सद्विचारों में वृद्धि और अन्तत: मोक्ष की प्राप्ति

शेष पृष्ठ ०७ पर......

www.thearyasamaj.org

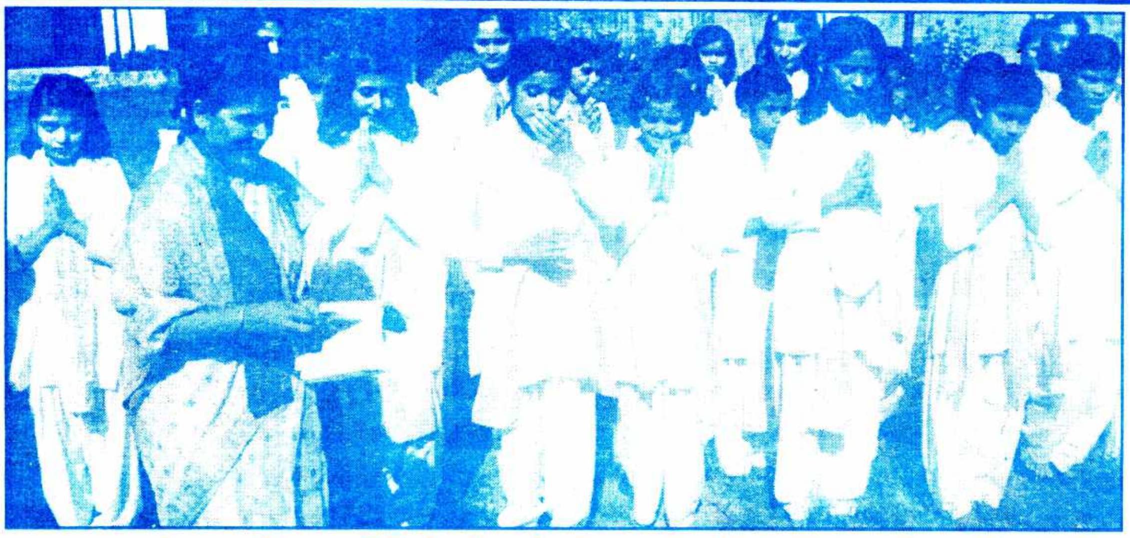

गुरुकुल नजीबाबाद में ब्रह्मचारिणियों को यज्ञोपवीत कराती हुई डॉ. प्रियंवदा वेदभारती- केसरी।

यज्ञोपवीत के तीन धागे कराते हैं तीन ऋणों का ज्ञान : वैदिक

कन्या गुरुकुल नजीबाबाद में हुआ वेदारम्भ संस्कार

वन्दना आर्या
नजीबाबाद।

आर्ष कन्या गुरुकुल विद्यापीठ में 20 अगस्त को ब्रह्मचारिणियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल की आचार्या वेद विदुषी डॉ. प्रियंवदा वेदभारती ने संस्कार कराते हुए कहा कि हमारे ऋषियों ने व्यक्ति के संस्कारों को परिष्कृत करने के लिए सोलह संस्कारों का विधान किया। संस्कार शरीर और आत्मा दोनों को विशुद्ध करते हैं, जिनके माध्यम से यही प्रयास किये जाते हैं कि व्यक्ति की सब प्रकार की मलिनताओं को दूर कर दिया जाए। इन संस्कारों में दसवां संस्कार उपनयन है, जिसके लिए बालक को गुरुकुल में प्रवेश दिलाया जाता था, जिसमें बालक को यज्ञोपवीत प्रदान किया जाता था। यज्ञोपवीत के तीन धागे तीन ऋणों का ज्ञान कराते हैं, जिनमें ऋषि ऋण का सूत्र (धागा) ऋषियों की परम्परा को याद कराता है, देव ऋण का सूत्र देवताओं की शुद्धि और प्रसन्न करने का स्मरण कराता है, तथा पितृ ऋण का सूत्र यह बताता है कि हमें पितरों की सेवा करनी चाहिए। सुमन कुमार वैदिक ने कहा कि तीन तीन धागे पुनः तीन-तीन धागों में बंटे हुए हैं। ऋषि-मुनियों ने इन्हें हमारे नौ द्वारों का प्रतीक भी, पांच ज्ञानेन्द्रियों, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार को शुद्ध करने का प्रतीक भी कहा है, जो ज्ञान, कर्म, उपासना के तीन धागों में समाहित हो जाते हैं। ऐतिहासिक हनुमान और मेघनाद युद्ध में मेघनाद ने हनुमान का यज्ञोपवीत पकड़ा था। जिसे उन्होंने काटने से अधिक अपने को पकड़वाना स्वीकार किया।

उन्होंने कहा कि यज्ञोपवीत श्रावणी पूर्णिमा को धारण और बदला जाता था। औरंगजेब के अत्याचारों से जब यज्ञोपवीत धारण करना और कराना अपराधा हो गया था, तो बहनों ने इसे रक्षासूत्र नाम देकर कलाई में बांधना प्रारम्भ किया।

इस अवसर पर गुरुकुल की प्रबन्धकारिणी के सदस्य विजय कुमार, किरतपुर (बिजनौर) ने कहा कि सन् 1971 में गुरुकुल करतारपुर में मैंने इसे धारण किया था। उस समय की याद स्मरण हो गयी, जब आचार्य धर्मदेव जी द्वारा यज्ञोपवीत अनेक ब्रह्मचारियों के साथ मुझे धारण कराया गया। यज्ञोपवीत धारण करने वाली कन्याओं को विजय, सौवीर आदि आगन्तुकों की ओर से झोली में पर्याप्त प्रोत्साहन दिया गया। गुरुकुल की कन्याओं ने भजन ''यज्ञोपवीत लेकर खुद को निहारना है/ जीवन सुधारने का संकल्प धरना है।।'' गीत गाकर अपने संकल्प को बताया।

संकल्पवान नारी ही दे सकती है आदर्श पुत्र को जन्म : पं० नफेसिंह

रमेश वेदी
नई दिल्ली।

आर्यसमाज, देवनगर (करोलबाग) के साप्ताहिक सत्संग पर 18 अगस्त को मुख्य वक्ता सुमन कुमार वैदिक ने कहा कि माता मदालसा ने गर्भ में ही अपने शिशुओं को ब्रह्मज्ञान संस्कार देकर ज्ञानी बना दिया था। जन्म के पश्चात् 5 वर्ष की अवस्था में वह ब्रह्मज्ञानी बन गये। ऐसे तीन पुत्रों को जन्म देने के पश्चात् जब राजा के कहने पर एक पुत्र अलार्क उत्पन्न किया, जिसे ब्रह्मज्ञान के स्थान पर राष्ट्रीयता का ज्ञान दिया। श्री वैदिक ने ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के प्रवचनों के कई प्रसंगों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि धनवान वह है, जिसने अपने धन का सदुपयोग किया है। आज हम कमरे में बन्द होते-जा रहे हैं। घरों का श्मशान बना लिया है। घरों में लाश (मांस) लाते हैं। उन्होंने अपने भोजन को शुद्ध बनाने का आह्वान किया। कहा कि आज स्वार्थ एवं अधिकार की पुकार एवं कर्तव्यों को छोड़ने से भी समस्याएं आ रही हैं, जिससे राष्ट्रीय कर्तव्य और संबन्धों की डोर कमजोर हो रही है।

समाज के प्रधान पं. नफेसिंह देसवाल ने ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के प्रवचनों के आधार पर कहा कि माता कौशल्या ने तप कर और राष्ट्रीय अन्न को त्यागकर स्वयं उत्पादित अन्न वनस्पति का पान कर वेदमंत्रों से यज्ञ कर पवित्र विचार बना, राम जैसे पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम आज नौ लाख वर्ष बाद भी है। आज संस्कारवान नारी कौशल्या के समान संकल्प करके ही समाज को आदर्श पुत्र दे सकती है, अन्यथा कीड़े-मकोड़ों के सन्तान उत्पन्न करने का कोई महत्व नहीं। अशोक मिश्रा (मंत्री आर्यसमाज) ने सभी को धन्यवाद दिया तथा प्रसाद वितरण कराया।

बच्चों का किया नामकरण संस्कार

सत्यदेव
नेमदारगंज।

आर्यसमाज नेमदारगंज (नवादा) के प्रधान अश्विनी कुमार की पौत्री का नामकरण संस्कार 'प्रभा' नाम से संबोधित ईशस्तुति प्रार्थनोपासना के उपरांत सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत' के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। क्षेत्र एवं गांव के ईष्टमित्रों को प्रीतिभोज से तृप्त किया गया। यजमान रविशंकर ने सबका धन्यवाद ज्ञापन किया।

आर्यसमाज नवादा नगर की यज्ञशाला में मंत्री राजेश आर्य के प्रथम सुपुत्र का नामकरण परोपकारिणी सभा, अजमेर के आचार्य सत्यजीत के संवाद एवं निर्देशानुसार 'आर्य लक्ष्येश' सत्यदेव प्रसाद आर्य मरुत के पौरोहित्य एवं गणमान्य पारिवारिक एवं आर्य सज्जनों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ, जिसमें आशीर्वाद प्रदाता स्त्री-पुरुषों का अल्पाहार से स्वागत किया गया। डॉ. भोला प्रसाद राजेश आर्य की व्यवस्था ने कार्यक्रम को रोचक एवं उत्साहवर्द्धक बनाया।

हानि-लाभ देखकर ही कर्म करें

सुमन कुमार 'वैदिक'
मेरठ।

आर्यसमाज साकेत का वेद प्रचार सम्मेलन 16 से 18 अगस्त तक आर्यसमाज परिसर में मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ. प्रियंवदा वेदभारती, आचार्या आर्ष कन्या गुरुकुल नजीबाबाद ने प्रथम दिवस कर्मफल व्यवस्था पर बोलते हुए कहा कि सुख-दुख, हानि-लाभ समझ कर हमें कार्य करना चाहिए। वेद का सिद्धांत है कि मनुष्य जैसा पकाता है, वैसा ही खाता है। वेद की विश्व को महान देन कर्मफल सिद्धांत भी है। मनुष्य जिन कर्मों को करके दुखों से तरे, उसी का नाम तीर्थ है। नदियों वाले तीर्थ तो डुबोकर मारने वाले हैं, सीताराम-राधेश्याम कहकर पाप समाप्त नहीं होते। मानव जो पाप-पुण्य करता है, उसे भोगना आवश्यक है। इसीलिए शुद्ध आहार-व्यवहार कर, पापों से बचने का प्रयास करना चाहिए। दूसरी सभा में यज्ञ द्वारा प्रकृति संरक्षण एवं विकास के बारे में बोलते हुए पर्यावरण के सुधार हेतु यजुर्वेद के 7.26 मंत्र की व्याख्या देते हुए वेद विदुषी ने कहा कि यज्ञमान, होता इत्यादि यज्ञ से सुगन्धित पदार्थों को अग्नि में छोड़ते हैं, वे वायु और जल आदि को पवित्र कर, पुनः पृथ्वी पर आ, सब प्रकार के रोगों को दूर करते हैं। इसलिए सभी मनुष्यों को यज्ञ करना चाहिए।

संसार में प्रत्येक मनुष्य संपत्ति चाहता है, चाहे वह भौतिक हो या आध्यात्मिक। किंतु आज का मानव भौतिक सम्पत्ति के प्रति संवेदनशील व जागरूक है। इसके स्थान पर आध्यात्मिक सम्पत्ति, जो अनेक प्रकार की है, उसे अपनाना चाहिए।

यज्ञ के ब्रह्मा, उपदेश, प्रवचन आदि के लिये सम्पर्क करें।
कार्यक्रम, यज्ञ आदि में भी बुलायें।
आचार्य पवनवीर
गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, शुक्रताल, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
सम्पर्क सूत्र : 09639661532

प्रवेश सूचना

उपदेशक महाविद्यालय टंकारा

प्रथम पाठ्यक्रम :- महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरियाणा) से मान्यता प्राप्त। विद्यालय में प्राच्य व्याकरण पाठ्यक्रम से अध्ययन कराया जाता है। प्रवेश प्राप्त करने के लिये कक्षा सात उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। आठवीं कक्षा में प्रवेश प्राप्त होगा। विद्यालय में पूर्व मध्यमा, उत्तर मध्यम, शास्त्री एवं आचार्य पर्यन्त का अभ्यासक्रम है; जिसमें प्राच्य व्याकरण के उपरान्त वेद, दर्शन, उपनिषद् और ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता है। यहां से उत्तीर्ण स्नातक बी.एड. अथवा अन्य परीक्षायें देकर सरकारी अथवा सरकार मान्य संस्थाओं में सेवा प्राप्त कर सकते हैं।

प्रथम पाठ्यक्रम में उपदेशक कक्षायें चलती हैं जिसमें व्याकरण, वेद, दर्शन, उपनिषदादि के उपरान्त ऋषि दयानन्द के समस्त ग्रन्थ पढ़ाये जाते हैं। भजन, प्रवचन तथा कर्मकाण्ड विशेष रूप से सिखाकर आर्यसमाज के पुरोहित हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है। यहां से उत्तीर्ण स्नातक आर्य समाजों अथवा आर्य संस्थाओं में पुरोहित अथवा अन्य सेवा कार्य प्राप्त कर सकते हैं। दोनों पाठ्यक्रमों में इच्छुक प्रवेशार्थी अपने निकटतम आर्य समाज से परिचय-पत्र प्राप्त कर लावें तो अधिक उचित होगा। दोनों पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्राप्त करने हेतु आचार्य जी से पत्र-व्यवहार अथवा दूरभाष से जानकारी प्राप्त करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
टंकारा, जिला-राजकोट, गुजरात-363659
फोन नं. 02822-287756 मोबा. 09913251448

भजनोपदेश हेतु सेवाएं उपलब्ध

कर्मकाण्ड, भजन प्रवचन एवं आर्य वीरांगना तथा योग शिविर हेतु सम्पर्क करें।
आ.ब्रह्मनारायण शास्त्री
(वैदिक प्रवक्ता)
आ. शोभा शास्त्री
(भजनोपदेशिका)

ग्रा. व पो.- अमौली (महर्षि दयानन्द बाजार), जिला- फतेहपुर (उ0प्र0)- 212631 मो. 08009179588, 07860524398

मनाया श्रीकृष्ण महोत्सव

राजेन्द्र पथिक
अलीगढ़।

आर्यसमाज, महर्षि, दयानन्द मार्ग में वेद प्रचार पर्व एवं श्रावणी महोत्सव 24 से 28 अगस्त तक बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया गया।

महोत्सव में आचार्य चन्द्रपाल आर्य (गाजियाबाद), स्वामी श्रद्धानन्द (सासनी गेट), डॉ. धर्मवीर शास्त्री, आचार्य पुष्पेन्द्र शास्त्री (अलीगढ़), रामकेश आर्य (खुर्जा), नौवतराम वानप्रस्थी (अजमेर), ब्रह्मचारी जी (अलीगढ़), आचार्य रणजीत शास्त्री (अलीगढ़) आदि विद्वत्जनों व भजनोपदेशकों ने यज्ञ, भजनोपदेश, व प्रवचन किये।

महायज्ञ सम्पन्न

हापुड़ (**सुमन कुमार वैदिक**)। विश्व कल्याण हेतु यजुर्वेद पारायण महायज्ञ आर्यसमाज ग्राम धनौरा (हापुड़) में 6 से 8 सितम्बर तक बड़ी धूमधाम से किया गया। आध्यात्मिक जगत की महान विभूति ब्रह्मलीन ब्रह्मचारी कृष्णदत्त महाराज की कृपा से यज्ञ गत तीस वर्षों से किया जा रहा है।

यज्ञ एवं वैदिक कृष्ण कथा का जन्माष्टमी पर आयोजन

गार्गी वैदिक
ग्रेटर नोएडा।

ग्रेटर नोएडा में कृष्ण जन्मोत्सव पर कल्पना शास्त्री, अरविन्द शास्त्री, सुमन कुमार वैदिक व अन्य।

आर्य विचार मंच का नौवां वार्षिक यज्ञ 26 से 28 अगस्त तक जे-ब्लॉक पार्क, बीटा-।। में मनाया गया। जिसमें ऋग्वेद के छटे एवं सातवें मण्डल के मंत्रों से चतुर्वेद यज्ञों के विशेषज्ञ आचार्य अरविन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया। अंकुर भारद्वाज एवं आर्ष कन्या गुरुकुल नजीबाबाद की यशस्वी स्नातिका कल्पना शास्त्री ने वेदपाठ एवं भजनों की प्रस्तुति की। इस अवसर पर स्वामी ब्रह्ममुनी (शाहपुर), डॉ. पवित्रा मुख्य अधिष्ठात्री, सासनी कन्या गुरुकुल एवं सुमन कुमार वैदिक उपस्थित रहे।

आचार्य अरविन्द शास्त्री द्वारा वैदिक श्रीकृष्ण की विवेचना ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के प्रवचनों से करते हुए कहा कि योगीराज श्रीकृष्ण महान वेदज्ञ याज्ञिक के साथ आध्यात्मिक और भौतिक दोनों विज्ञान के ज्ञाता थे। सोलह कलाओं के ज्ञाता श्रीकृष्ण जितने बलिष्ठ और बुद्धिमान के साथ उदार भी थे, निंदा को सहन करने वाले कृष्ण की प्रतिमा बाल्यकाल में प्रजा ने स्वीकार कराली थी। जब उन्होंने योजनाबद्ध हो अत्याचारी कंस को नष्ट किया। संदीपन आश्रम में विद्या के समय सुदामा के साथ कई वैज्ञानिक यन्त्रों का निर्माण किया तथा व्याकरण, दर्शन, योग, वेद, प्राण विद्या के साथ सभी विज्ञान में निपुणता प्राप्त की। अपनी कथा के माध्यम से गोपिकाओं, चीरहरण, विराट स्वरूप की बहुत अच्छी प्रकार से व्याख्या की जिसे सभी ने सराहा। कल्पना शास्त्री ने कहा कि आज राष्ट्र पतन के कारणों में एक कारण यह रहा है कि हम अपने महापुरुषों के जीवन चरित्र की रक्षा करने में विफल रहे। इस कुटिलता से सर्वाधिक प्रभावित भगवान श्रीकृष्ण रहे। जिन पर भागवत एवं भक्ति काल के श्रंगार एवं भक्ति कवियों ने अनुचित और मनमाने दोष लगाये। जिन्हें सुनाकर अन्य मत वाले श्रीकृष्ण की बहुत निन्दा करते हैं। सासनी गुरुकुल की मुख्य अधिष्ठात्री डॉ. पवित्रा वेदालंकार ने कहा कि आज भगवान कृष्ण के नाम पर पुराणों के कारण अनेक ऐसी मान्यता प्रचलित हैं जिनका द्वापर के इतिहास से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है।

ब्रह्ममुनी जी ने कृष्ण सुदामा मित्रता के प्रसंग को काव्य के साथ सुना कर भाव विभोर कर दिया। सुमन कुमार वैदिक ने कहा कि जिस प्रकार महर्षि दयानन्द ने श्रीकृष्ण को आप्त पुरुष कहा और उनके उज्ज्वल स्वरूप को हमें दिखाया। इसी प्रकार ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी ने अपने प्रवचनों के माध्यम से उन ग्रन्थियों को खोलकर सही स्वरूप हमारे सम्मुख रखा। उन्होंने नाम मंथन, द्रोपदी की बठलोई इत्यादि कई प्रकरणों की व्याख्या की। इस अवसर पर सुमनकुमार वैदिक, शिवकुमार आर्य, मुकेश कुमार आर्य व धर्मवीर आर्य (सूरजपुर) दम्पत्ति यज्ञ के यजमान रहे।

धूमधाम से मनाया श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व

रमेश सिंह
मुरादाबाद।

आर्यसमाज, स्टेशन रोड, पर इस देश के महानायक चक्र सुदर्शन धारी योगीराज श्रीकृष्ण का जन्माष्टमी पर्व मनाया गया। इस अवसर पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें सतीश चन्द्र मदान, अरुणा मदान, डॉ. हेमेन्द्र सिंह, पूनम सिंह, शौरभ गुप्ता, अंशिका गुप्ता, डॉ. अभय श्रोत्रिय, मयंक यज्ञमान रहे। यज्ञ पं. दिवाकर शास्त्री ने कराया।

कार्यक्रम में देवशर्मा एवं जयप्रकाश शर्मा ने श्रीकृष्ण की महानता पर ओजस्वी भजन प्रस्तुत करके श्रीकृष्ण की श्रेष्ठता को स्थापित किया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता आचार्य डॉ. विनय वेदालंकार ने श्रीकृष्ण की गाथा का उल्लेख करते हुए कहा कि भगवान राम और कृष्ण ने भारतीय जन-जीवन को सर्वाधिक प्रेरित, प्रभावित एवं अनुप्रमाणित किया है। देश के जनमानस में इन्हीं दो दिव्य पुरुषों को सर्वोत्तम लोकप्रियता, मान्यता तथा श्रद्धा प्राप्त हुई है क्योंकि उन दोनों का जीवन वेदानुकूल था।

ऐसे महान योग्य व्यक्तित्व पर राधा के संग का प्रलाप समाज में फैलाकर उनकी महानता को, योग्यता को नष्ट कर रहा है। हम सही रूप में श्रीकृष्ण को मानकर इस समाज से भ्रष्टाचार, अत्याचार समाप्त करें।

इस अवसर पर डॉ. ओमप्रकाश वेदार्थी ने भी श्रीकृष्ण की ऐतिहासिकता पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में विनोद कुमार, शोभित रस्तौगी, सन्तोष गुप्ता, अक्षय सोती, ओमप्रकाश आर्य, मीरा सोती, शकुन्तला आर्या, मिथलेश आर्या, अर्जुनवीर वर्मा, निर्मल आर्य, एम. पी. शर्मा वैद्य, अरविन्द आर्य बन्धु, वीरेन्द्र आर्य, घनश्याम दास, राजपाल सिंह नागर, अमित, कृष्ण कुमार आदि रहे। संचालन रमेश सिंह ने किया तथा अध्यक्षता डॉ. राममुनि ने की।

आगामी वार्षिकोत्सव

- १९, २०, २१ अक्टूबर २०१३, आर्यसमाज हसनपुर (अमरोहा) मो० (मंत्री)- ९४१२४७४७९५
- २६, २७, २८ अक्टूबर २०१३, आर्यसमाज दढ़ियाल (अमरोहा) मो० (मंत्री)- ९४१२४९३७२४
- ३०, ३१ अक्टू. १ नव. २०१३, आर्यसमाज करनपुर माफी (अमरोहा) मो० (मंत्री)- ९९२७०२४४१८
- २, ३ नवम्बर २०१३, आर्यसमाज रामपुर सफेद (अमरोहा) मो० (मंत्री)- ९४१०६८०५३४
- १२ से १७ नवम्बर २०१३, मण्डलीय आर्य महासम्मेलन गंगा मेला, तिगरी घाट (अमरोहा) आयोजक- आर्य उपप्रतिनिधि सभा, अमरोहा मोबा० (अध्यक्ष): ९४१२१३९३३३

२७ से होगा प्रान्तीय सम्मेलन

जोधपुर (**विजय सिंह भाटी**)। महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास और आर्यसमाज जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में 27 से 30 सितम्बर तक प्रान्तीय स्तर पर एक आर्य सम्मेलन किया जा रहा है। इस सम्मेलन में आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान, तपस्वी, साध, संन्यासी एवं ऋषिभक्त पधार रहे हैं। सम्मेलन में आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति का अवलोकन करते हुए व्याप्त समस्याओं के सटीक समाधान प्रस्तुत किये जाएंगे तथा उन्हें संगठन के और व्यक्तिगत स्तर पर जीवन में धारण करने के लिए कार्य योजना पर कार्य किया जाएगा। समस्त ऋषिभक्त, सिद्धांतनिष्ठ आर्यों से प्रार्थना है कि आप सम्मेलन म पधार कर आर्य समाज को जीवन देने वाले अभियान में सहयोगी बनें।

संयुक्त तत्वावधान में मनाया गया श्रावणी पर्व

कै. अशोक गुलाटी
नोएडा।

दिल्ली संस्कृत अकादमी और आर्ष गुरुकुल नोएडा द्वारा श्रावणी महोत्सव संयुक्त रूप से मनाया गया। इस अवसर पर वृहद यज्ञ एवं नवप्रविष्ट ब्रह्मचारिणियों का यज्ञोपवीत संस्कार के साथ विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं, जिनमें आर्ष गुरुकुल नोएडा, आर्ष कन्या गुरुकुल नजीबाबाद, एवं पाणिनी कन्या गुरुकुल बनारस की प्रतिभागियों ने भाग लिया। संस्कृत श्लोक गीत गायन में प्रथम पुरस्कार ब्रह्मचारिणी वरेण्या एवं शीतल (नजीबाबाद), तथा संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में नोएडा गुरुकुल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण आर्ष कन्या गुरुकुल की स्नातिका कल्पना एवं मनीषा द्वारा भजन संध्या में सुमधुर और सुन्दर रूप से प्रस्तुत भजन रहे। इनके द्वारा प्रस्तुत भजन ''एक जंगल में नयी बस्ती बसायी तूने, वेदों का किया प्रचार दयानन्द तुम्हारा क्या कहना'' तथा ''आनन्द स्रोत बह रहा, पर तू उदास है'' आदि पर श्रोता झूम उठे।

इस अवसर पर नोएडा के छात्र राजकिशोर अंकुर तथा देवेन्द्र को सम्मानित किया गया। विद्वत गोष्ठी में वैदिक विदुषी आचार्या नन्दिता शास्त्री (पाणिनी कन्या गुरुकुल, वाराणसी) ने कहा कि जिस परमात्मा ने सृष्टि की रचना की, शब्दमयी सृष्टि की भी उसी ने रचना की। वही उसकी व्याख्या कर सकता है, अन्य नहीं। डॉ. वेदालंकार ने विज्ञान की परिभाषा बताते हुए कहा कि वेद ही वैज्ञानिक ग्रन्थ है, ऐसा कोई अन्य ग्रन्थ नहीं है। वेद का प्रारम्भ अग्नि से है। आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ने कहा कि ईश्वर, जीव, व प्रकृति को जानना ही विज्ञान है। सर्वेसन्तु निरामया का भाव केवल भारत में ही है। अन्त में प्रधाना गायत्री मीणा एवं एवं कैप्टन अशोक गुलाटी द्वारा सभी को धन्यवाद दिया गया।

भजनोपदेश हेतु सम्पर्क करें

वेद प्रचार तथा बोध सप्ताह एवं उत्सवों पर सदैव उद्यत

पं. सतीश 'सुमन'
पं. सुभाष 'राही'

आर्यकुटी हाऊस नं० 288,
रामपुरी, रुड़की रोड,
मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)-251001

मोबाईल नं० - 09897302352, 09760895671

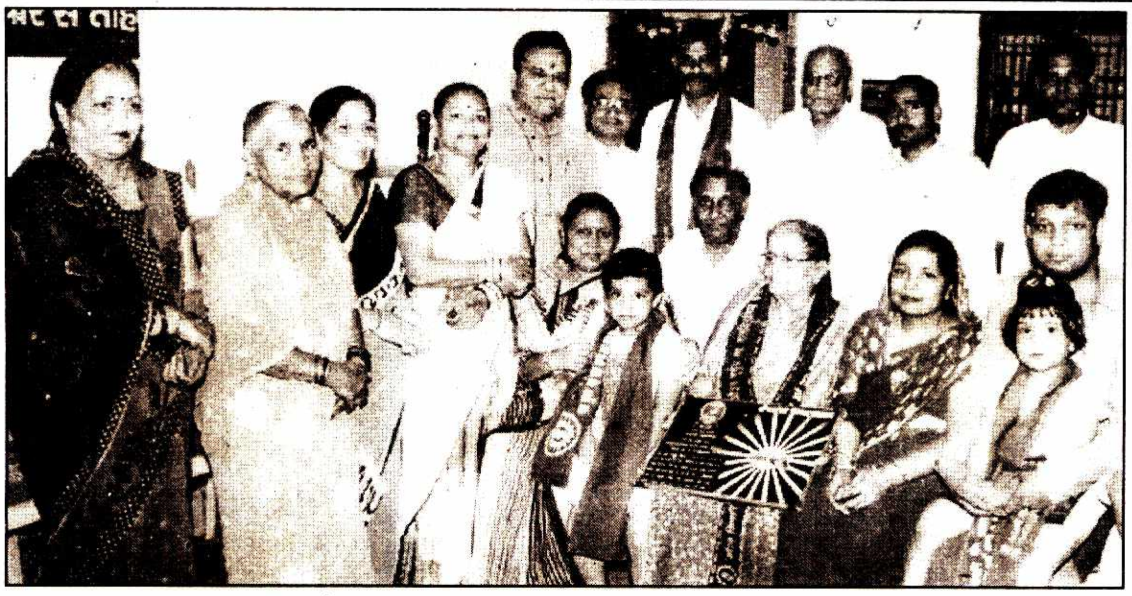

पारिवारिक वेदप्रचार सप्ताह कार्यक्रम में उपस्थित आर्यजन- केसरी।

२७वां पारिवारिक वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

जगदीश चन्द्र वसु
पानीपत।

महिला आर्यसमाज देसराज कालोनी, पानीपत के तत्वावधान में पारिवारिक वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन 4 से 11 अगस्त तक आयोजित किया गया। 11 अगस्त को समापन समारोह की अध्यक्षता डॉ. बी.बी. शर्मा (प्राध्यापक आर्य आर्यमहाविद्याल) पानीपत ने की। ब्रजकिशोर शास्त्री के निर्देशन में यज्ञ सम्पन्न हुआ।

राजस्थान से पधारे ओमप्रकाश राघव भजनोपदेशक ने प्रभु भक्ति, देश भक्ति व महर्षि दयानन्द के यशगान से सभी को सराबोर कर दिया। प्रिं. स्वदेश कुमार शास्त्री ने संस्कृत एवं संस्कृति की रक्षा के लिए वेदों को अपनाने पर जोर दिया। आ. ओमप्रकाश शास्त्री ने कहा कि हमारे पूर्वज बल की उपासना करते थे, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगीराज श्रीकृष्ण, महावीर हनुमान आदि बल की उपासना करते थे, बल से ही हमारे देश की स्वाधीनता अक्षुण्ण रह सकती है। डॉ. दर्शनलाल आजाद की ओजस्वी कविताएं भी हुईं। आर्यसमाज देसराज कालोनी के संस्थापक, संरक्षक पं. जगदीश चन्द्र वसु के सान्निध्य में शाल, व ओम पटके, स्मृति-चिह्न आदि से सम्मान किया गया।

मनाया वेदप्रचार सप्ताह

कन्नौज/ आदित्य प्रकाश आर्य। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कन्नौज द्वारा सम्पूर्ण जनपद में वेदप्रचार सप्ताह 21 अगस्त से 28 अगस्त तक अत्यंत धूमधाम से मनाया गया, जिसमें आचार्य पं0 रक्षपाल देव भजनोपदेशक (शाहजहांपुर) एवं स्वामी प्रभुवेश (औरैया) ने अपने भजनोपदेशों द्वारा प्रचार कार्य किया।

मनाया वेद प्रचार सप्ताह

सुमन कुमार वैदिक
मेरठ।

आर्यसमाज, शास्त्रीनगर में 8 से 11 अगस्त तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया गया। आर्य चन्द्रदत्त शर्मा (बदायूं) ने यज्ञ तथा प्रवचनों के माध्यम से ज्ञान दिया, वहीं पं. भानुप्रकाश, बरेली ने सुमधुर भजनों की प्रस्तुति की। ठाकुर विक्रमसिंह द्वारा आर्यवीर दल तथा छोटे बच्चों को मंत्र बोलकर सुनाने पर पुरस्कृत किया। 10 अगस्त को महिला सम्मेलन में भजनोपदेशक सुदेश (दिल्ली) व निष्ठा वेदालंकार मुख्य वक्ता थीं। प्रधान राजेन्द्र सिंह वर्मा ने धन्यवाद दिया।

आपदा पीड़ितों की मदद का संकल्प

कै० अशोक गुलाटी
नोएडा।

आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, बी- 69, सै0-33, नोएडा में सम्पन्न हुई बैठक में उत्तराखण्ड में प्राकृतिक आपदा पर गहन संवेदना प्रकट करते हुए चिंता प्रकट की। हादसे के शिकार दिवंगत आत्माओं की शांति एवं सद्गति के लिए शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया व प्रार्थना की गयी। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ0 जयेन्द्र आचार्य थे। आर्यसमाज नोएडा, उत्तराखण्ड के आपदाग्रस्त बेसहारा बच्चों को अपने आर्ष गुरुकुल नोएडा में 50 लड़के तथा सोरखा में संचालित कन्या गुरुकुल में 100 लड़कियों के रहन-सहन व शिक्षा की सम्पूर्ण जिम्मेदारी वहन करेगा।

आर्यसमाज के कैप्टन अशोक गुलाटी एवं लवानिया जी नोएडा की सामाजिक संस्थाओं के लोकमंच सहयोग से एकत्रित 2 ट्रकों में 401 पार्सल (करीब 35 किलो), जिसमें भोजन सामग्री के साथ-साथ कुर्ता-पायजामा (2 सैट), साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट (3 सैट), कम्बल 3, प्रैशर कुकर, चद्दरें, मोमबत्ती, बर्तन एवं अन्य सामान रुद्रप्रयाग होते हुए दुर्गम रास्तों से होकर पयाली, जखोली आदि गांवों के पीड़ित परिवारों को प्रदान की गयी।

महर्षि पतंजलि द्वारा रचित

योगदर्शनम्

भाष्यकार : आचार्य राजपाल सिंह शास्त्री

योग के प्रकृत स्वरूप को जानने और योगविद्या के सूक्ष्मतत्वों को समझने के लिए योगदर्शन का आद्योपान्त अनुशीलन आवश्यक है, ओर इसके लिए योगसूत्रों का ऐसा भाष्य अपेक्षित है, जो विवेचनात्मक होने के साथ-साथ योग के रहस्यों को सुन्दर, सरल भाषा में उपस्थित कर सके। आचार्य पं. राजपाल सिंह शास्त्री योगदर्शन का विद्योदय भाष्य आचार्य जी के दीर्घकालीन चिन्तन-मनन का परिणाम है। इस भाष्य के माध्यम से उन्होंने योगसूत्रों के सैद्धांतिक एवं प्रयोगात्मक पक्ष को विद्वज्जनों तथा अन्य जिज्ञासुओं तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया है।

इस भाष्य के अध्ययन से अनेक सूत्रों के गूढ़ार्थ को जानकर योग जैसे क्लिष्ट विषय को आसानी से समझा जा सकता है। योग मार्ग पर चलने वाले मुमुक्षु जनों के सन्मुख विद्योदय भाष्य की यह द्वितीय आवृत्ति प्रस्तुत है। जनता ने इसको सराहा और अपनाया है। निश्चय ही, सुजन इससे लाभान्वित होंगे। यह पुस्तक शायद 'योगदर्शनम्' को समझने में कुछ मदद करें।

मधुर प्रकाशन, 2804, आर्यसमाज गली, बाजार सीताराम,
दिल्ली-110006, दूरभाष :- 011-23238631

आर्य साहित्य पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियां आमंत्रित

आर्यसमाज में अनुसंधान, लेखन, प्रकाशन व सम्पादन परम्परा और महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के सिद्धांतों को प्रगति देने के उद्देश्य से गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (पंजी0) ने स्मृति शेष चौ0 गुगनराम सिहाग, उनकी छोटी बहिन स्मृति शेष श्रीमती रज्जी देवी नन्दराम सिहाग की पावन स्मृति में तीन साहित्य पुरस्कार प्रारम्भ किये गये हैं। ये साहित्य पुरस्कार प्रत्येक वर्ष दिये जाते हैं। इन पुरस्कारों का उद्देश्य आर्यसमाज में सुन्दर, संग्रहणीय, मौलिक हिन्दी, संस्कृत इत्यादि भाषा में अधिक से अधिक गद्य व पद्य साहित्य के प्रचार-प्रसार में सहायक वैदिक साहित्य, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, शोध प्रबन्ध, भजन संग्रह, काव्य, आयुर्वेद इत्यादि के लेखकों, प्रकाशकों व सम्पादन को प्रोत्साहन करना है। भारतवर्ष के प्रत्येक राज्य के तीन साहित्यकारों के लिए तीनों पुरस्कार अलग-अलग रूप से अपेक्षित हैं। स्वर्गीय लेखक/ साहित्यकार की प्रकाशित कृति को उनके पुत्र, पुत्री, पति, पत्नी व उत्तराधिकारी भी भेज सकते हैं।

इन पुरस्कारों के लिए कोई भी लेखक, सम्पादक, कवि, शोधकर्ता अपनी-अपनी पुस्तकें जो जनवरी 2006 से दिसम्बर 2013 तक के मध्य प्रकाशित हुई हैं। पुस्तकों की एक-एक प्रतियां, लेखक के दो चित्र, परिचय के साथ अपनी-अपनी प्रविष्टियां व्यक्तिगत रूप से, कोरियर या रजिस्टर्ड डाक द्वारा 31 जनवरी 2014 तक सोसायटी के कार्यालय में भेजे जा सकते हैं। इसके लिए कोई प्रवेश शुल्क नहीं है। पुरस्कारों की कोई सीमा निश्चित नहीं है।

कार्यालय पता-
सचिव, नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट, गुगनराम सोसायटी भवन, 202, पुराना हाउसिंग बोर्ड, भिवानी (हरियाणा)- 127021

सोसायटी/ निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम व मान्य होगा। एक लेखक/ सम्पादक कितनी भी रचनाएं भेज सकता है। एक लेखक/ सम्पादक को उसकी एक से अधिक पुस्तकों पर भी पुरस्कार दिया जा सकता है। पुरस्कार हेतु प्राप्त पुस्तकें लौटायी नहीं जाएंगी। प्रत्येक पुरस्कार में सोसायटी की ओर से प्रशस्ति-पत्र व नकद पुरस्कार दिया जाएगा।

सचिव- **नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट**
एम.ए. (समाज शास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी), एम.लिब., एम.फिल., एल-एल.बी. (ऑनर्स), डी.पी.आर. (रजत पदक विजेता), प्रभाकर, शिक्षा विशारद, आयुर्वेदरत्न, धर्माधिकारी, विद्या वाचस्पति)
चलभाष : 09466532152, 09255115175

धार्मिक परीक्षाओं के लिए आवेदन आमंत्रित

वर्तमान समय में आमजन व छात्र-छात्राओं में धार्मिक एवं नैतिक भावना भरने और बौद्धिक, साहित्यिक एवं धार्मिक पुस्तकों के स्वाध्याय की ओर से अभिरुचि उत्पन्न करने की दृष्टि से महर्षि दयानन्द शिक्षा परिषद् 'आर्यरत्न' और 'आर्यभूषण' नाम से धार्मिक परीक्षाओं का आयोजन प्रतिवर्ष पत्राचार माध्यम से किया जाता है। किसी भी परीक्षा में कोई भी नागरिक अपनी योग्यतानुसार (जो हिन्दी भाषा पढ़ना-लिखना जानता हो) इन परीक्षाओं में बैठ सकता है।

ये परीक्षाएं पत्राचार माध्यम से घर बैठे दे सकते हैं। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को आकर्षक प्रमाण-पत्र (उपाधि-पत्र) दिये जाएंगे। इस वर्ष ये परीक्षाएं दिसम्बर 2013 में आयोजित हो रही हैं। परीक्षाओं के लिए आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि 31 अक्तूबर 2013 है। कोई भी आर्यसमाज, संस्था, विद्यालय, गुरुकुल आदि अपने यहां केन्द्र स्थापित कर सकता है। परीक्षा शुल्क 'आर्य-रत्न'- 40 रु0, 'आर्य-भूषण'- 50 रु0, रखा गया है। परीक्षा शुल्क पोस्टल आर्डर (आईपीओ) या नकद जमा करवाया जा सकता है। परीक्षा शुल्क नरेश सिहाग के नाम आवेदन पत्र के साथ ही भेजें। जो कोई भी धार्मिक परीक्षा देना चाहता है, वह सादे कागज पर परीक्षा का नाम लिखकर अपना पूरा नाम, पिता का नाम व पत्राचार का पूरा पता साफ-साफ देवनागरी (हिन्दी) में लिखकर कार्यालय परीक्षा नियंत्रक महर्षि दयानन्द शिक्षा परिषद् गुगनराम सोसायटी भवन, 202- पुराना हाउसिंग बोर्ड, भिवानी- 12702 हरियाणा के पते पर भेजें।

परीक्षा नियंत्रक- **नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट**
एम.ए. (समाज शास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी), एम.लिब., एम.फिल., एल-एल.बी. (ऑनर्स), डी.पी.आर. (रजत पदक विजेता), प्रभाकर, शिक्षा विशारद, आयुर्वेदरत्न, धर्माधिकारी, विद्या वाचस्पति)
चलभाष : 09466532152, 09255115175

सार्वभौमिक पथ के प्रणेता युग प्रवर्तक दयानन्द

इस युग के महानत्तम सुधारक सुक्रान्तिकारी वेद शास्त्रो के प्रकाण्ड पण्डित अत्यन्त दूरदर्शी क्रान्तिदर्शी और परमात्मा की सत्ता में अटल विश्वास रखने वाले सत्यनिष्ठ अखण्ड ब्रह्मचारी आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द साधारण व्यक्ति न थे। कठोर तपस्या और त्याग से स्वामी जी ने मानव मात्र को आदर्श मार्ग दर्शन देकर कतार्थ किया है। उन्होंने शुद्ध वैज्ञानिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण से उत्तम साहित्य का सृजन किया है। साथ ही, वेदानुकूल आर्ष साहित्य लिखकर मानव समाज को मौलिक विचारणा प्रदान की है। महर्षि ने न केवल अन्धविश्वास से भरी पौराणिकता और भौतिकवाद युक्त नास्किता के बीच फंसे जन समुदाय को तर्क से परिशोधित एवं वैज्ञानिक कसौटी पर खरा उतरा हुआ वैदिक धर्म का विदेक दिया वरन् वेदों में वर्णित वैदिक समाजवाद व वैदिक वर्ण व्यवस्था तथा आश्रम व्यवस्था की वैज्ञानिक व्याख्या करके मानव मात्र के उत्थान का उद्‌घोष किया है। ऋषि ने एक राष्ट्र, एक धर्म, एक भाषा और एक आर्य जाति का सन्देश देकर एकता का मूल मंत्र दिया है। 'स्वराज्य' के वर्तमान में सर्वप्रथम उद्‌घोषक ऋषि दयानन्द ही थे। विदेशियों के पाशों में जकड़ी आर्य जाति में प्राण फूंकने वाले क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि ही थे। उन्हीं से प्रेरणा पाकर भारत के अनेक वीरों ने बलिदान देकर सदियों से अभिषप्त व गुलाम भारत को स्वतंत्र कराया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती महान संस्कृतज्ञ तथा वेदज्ञाता थे। वे विद्धान ही नहीं, वरन् एक अत्यन्त विनम्र, श्रेष्ठ महापुरुष थे। निश्चय ही, वे भारत माता के उन सुप्रसिद्ध और उच्च महात्माओं में सिरमौर थे, जिनका नाम संसार के इतिहास में सदा चमकते हुए सितारों की तरह प्रकाशित रहेगा। वह भारत के उन सपूतों में से थे, जिनके व्यक्तित्व पर जितना भी अभिमान किया जाये, कम थे।

महर्षि दयानन्द भारतवर्ष की वर्तमान आध्यात्मिक शान्ति के जन्म दाता कहा जा सकता है। उन्होंने स्वराज्य का रहस्य सत्यार्थ प्रकाश में समझाया। यदि कोई भी समाज या राष्ट्र सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओ के अनुसार चले, तो पृथ्वी की कोई भी शक्ति उस समाज या राष्ट्र को उन्नतिशील बनने व वहां स्वाधीनता की ज्योति को ज्योतित होने से नहीं रोक सकती।

वास्तव में, महर्षि दयानन्द युग प्रवर्तक ऋषि थे। उन्होंने सोते हुए जनमानस को गहन निद्रा से जगाया। उन्होंने वेद के मार्ग के अनुसरण का आह्वान किया। आज सारा संसार उस दिव्य आप्त महापुरुष के प्रति नत् मस्तक है। आओ हम सब ऋषि दयानन्द के बताये सुपथ पर चलकर अपना मार्ग प्रशस्त करें।

ध्यान क्यों नहीं लगता?

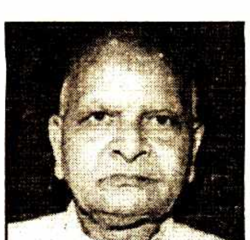

देवराज आर्यमित्र

कुछ सज्जनों का कहना है कि संध्या (ईश्वर-भक्ति) करते समय ध्यान नहीं लगता। ध्यान नहीं लगने का कारण है, धारणा दृढ़ नहीं है। ध्यान लगाने से पहले धारणा बनानी पड़ती है। यदि धारणा पक्की नहीं है, तो ध्यान कभी नहीं लगेगा। ध्यान लगाने के लिए धारणा को अटूट बनओ।

धारणा बनती है मन के द्वारा, और मन है चंचल। फिर पहले मन को वश में करो। मन बुद्धि के अधीन है। यदि बुद्धि में ही मलिनता भरी हुई है, तब मन मनमानी करने में स्वतंत्र हो जाता है। इन्द्रियों के बहकावे में आकर संयम खो देता है। धारणा धरी रह जाती है। फिर ध्यान लगने का प्रश्न ही नहीं होता।

प्रिय बन्धुओं! पहले बुद्धि को निर्मल करो, बुद्धि की निर्मलता के लिए शुद्ध सात्विक आहार ग्रहण करो। तामसिक भोजन से बचो, जो बुद्धि भ्रष्ट करता है। विद्वानों का सत्संग करो, आर्ष पुस्तकों का स्वाध्याय करो। मन को वश में करने के लिए प्राणायाम द्वारा अभ्यास करो।

मन में धारणा बनाओ कि ईश्वर उपासना करनी आवश्यक है। धारणा जमते ही ध्यान लगना सम्भव हो जाएगा।

जैसे प्यासे व्यक्ति की धारणा पानी प्राप्त करने की और ध्यान लगा देती है, वैसे ही ईश्वर-भक्ति की धारणा बनाने से ध्यान लग जाता है।

-डब्ल्यू जैड-४२८
हरीनगर, नई दिल्ली-६४

पहले स्वयं आर्य बनें औरों को आर्य बनाने वाले

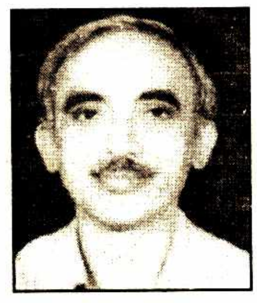

ओम प्रकाश भोला

स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' जी की पुस्तक 'मानव धर्म' से कुछ पंक्तियां उद्धृत करना चाहता हूं। वे कहते हैं कि "हम आर्य हैं और हम सारे संसार को आर्य बनाएंगे।" मैं पूछता हूं कि "जब तुम में न आर्यता है न मानवता है, तब ये गर्वोक्तियां करते हुए तुम्हें आत्मग्लानि क्यों नहीं होती?" वे कहते हैं "हमारे वेदों में लिखा है कि "मनुर्भव, जनम दैव्यं जनम्" अर्थात मानव बन, और दिव्य जनत्व मानवत्व का प्रकाश कर। मैं पूछता हूं कि यदि तुममें मानवता नहीं है, यदि तुममें दिव्य जनत्व नहीं है, यदि तुमने अपने मानव जीवन में मानवता की स्थापना नहीं की है, यदि तुमने अपने मानव मन्दिर में दिव्य जनत्व का दीपक नहीं जलाया है, यदि तुमने अपनी मानवदेह को मानवता की ज्योति जगाकर दिव्य जनत्व का प्रकाश नहीं किया है, तो तुम्हें अपने आप को वेदानुयायी कहते हुए लज्जा क्यों नहीं आती।

स्वामी विदेह जी के उपरोक्त शब्द 'आधुनिक' आर्यो को सचेत कर रहे हैं कि हे आर्यो, पूरे विश्व को आर्य बनाने की ध्वजा को उठाने वालो! पहले स्वयं पर दृष्टिपात कर लो, अन्यों के सुधार में आप अपना सुधार करना क्यों भूल गये हो?

आज हमें अनेक पत्र प्राप्त होते हैं, जिनमें इन चिन्ताओं, वेदनाओं और परिस्थितियों को व्यक्त किया जाता है कि "क्या आर्यसमाज की पुरानी प्रतिष्ठा लौट कर आएगी?" तो उत्तर स्पष्ट है- हाँ। महर्षि दयानन्द का कार्य निष्काम जाने वाला नहीं है। महर्षि की दृष्टि में मानव निर्माण का सबसे अचूक उपाय ईश्वर की सत्ता में विश्वास और ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव को समझ कर जीवन में धारण करना है। महर्षि ने प्रत्येक व्यक्ति को आर्य बनाने के बहुत ही सरल उपाय बताए हैं। उन्होंने प्रत्येक मानव को दैनिक जीवन में करने योग्य पांच कर्मों को अनिवार्य बताया है। आज यदि हमें आर्यसमाज को बचाने की चिन्ता है, तो मेरे विचार से सबसे पहले 'मुझे' स्वयं आर्य बनना होगा, जीवन में नित्य प्रातः व सायं संध्या यज्ञादि तो अवश्य करना होगा, अपने परिवार में, विशेषकर बच्चों को संध्या, यज्ञ अवश्य सिखाना व करवाना होगा, ऋषि के सिद्धांतों और आदर्शो को जानकर, मानकर, जीवन में अवश्य धारण करना होगा, ऋषि ने अपने ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर हमें सचेत किया है कि हमारा जीवन संयमी होना चाहिए, सत्य पर आधारित होना चाहिए, आज यदि आर्यसमाज की संस्थाओं में फैले विवादों को दूर करना है, तो ऋषि के एक ही सिद्धांत को अपनाकर कि "सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।" जो-जो सत्य है, उसे सब मान लें, स्वीकार कर लें; और जो-जो हमारी भूलवश असत्य हो गया है, उसे छोड़ दें, तो हमारे झगड़े निपट सकते हैं।

ये सभी सभाएं अपने मूल उद्‌देश्य से भटक कर आज हास-परिहास का विषय बन गयी हैं। जिस सत्य के लिए स्वामी जी ने अपना जीवन बलिदान कर दिया, उस सत्य को कैसे भुला दिया? क्यों कर्मफल सिद्धांत को भूल गये हम, क्यों संध्या भूल गये, क्यों गायत्री छोड़ दी, क्यों विश्वानिदेव के मंत्र का अर्थ हृदय में धारण करने से चूक गये, क्यों असत्य का मार्ग अपना लिया?

आर्यसमाज में आज भी बहुत लोग ऐसे हैं, जिनमें आर्यत्व है, वैदिक सिद्धांतों के प्रति निष्ठा है, ऋषि के मिशन के प्रति दीवानगी है। स्वामी जी ने मनुष्य मात्र के कल्याण की भावना से वेदों के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को धर्मात्मा बनने की प्रेरणा की। उन्होंने वैदिक धर्म को सीमित न रखकर व्यापक रूप देने के लिए आर्यसमाज की स्थापना की। उन्नति के शिखर पर आर्यसमाज को देखकर और इसी व्यापकता का सहारा लेकर उसमें अनार्य लोग घुस गये। हमने उनकी पहचान नहीं की और ऋषि द्वारा निर्धारित नियमों की अवहेलना कर, उन्हें आर्यसमाज का सदस्य और पदाधिकारी बना दिया, जिसका परिणाम आज हम भुगत रहे हैं। हमारी लापरवाही और उदासीनता का नतीजा था कि ऐसे असमाजिक तत्व आर्य समाज में प्रवेश कर गये, जिनका न तो जीवन आर्य सिद्धांतों पर आधारित था, और न ही वे आर्यसमाज को मानते थे। उन्होंने आर्यसमाज की बहुत बड़ी क्षति की। यदि आज भी स्वामी जी द्वारा सदस्यता के लिए बनाये गये विधि-विधान व सिद्धांतों का पालन करें, तो हम आर्य लोग उनको सही मार्ग पर ला सकते हैं।

आज बहुत से लोग कहते हैं कि "आर्यसमाज का काम तो पूरा हो गया, अब आर्यसमाज की आवश्यकता नहीं रही।" मेरा उनसे कहना है कि आज के युग में पहले से भी अधिक आवश्यकता आर्यसमाज की हो गयी है। स्वामी जी ने तो इसे आर्यसमाज के छठे नियम अनुसार मृत्युंजय मंत्र दिया, जब तक संसार रहेगा, तब तक आर्यसमाज की आवश्यकता रहेगी। महर्षि दयानन्द ने देश में प्रचलित पाखण्डों, अंधविश्वासों, कुरीतियों, धर्म के नाम पर फैली विसंगतियों आदि के निराकरण के लिए आर्यसमाज की स्थापना की थी। क्या ये सब दोष समाप्त हो गये हैं? आज हम ही अपनी दुकान बन्द किये बैठे हैं, तभी तो हर क्षेत्र में शिथिलता आ गयी। क्या नवयुवकों में सयंम और ब्रह्मचर्य की शिक्षा दी जा चुकी है, क्या शिक्षा में सुधार हो गया? क्या पूर्ण गोवध प्रतिबन्ध व नशाबन्दी हो गयी? क्या हिन्दी का उद्धार हो गया? क्या पुराने अन्धविश्वास व कुरीतियां पुनः नहीं पनप रहीं? क्या नये अंधविश्वास, जैसे वास्तुदोष, ज्योतिष के अंधविश्वास आदि समाप्त हो गये? क्या नये-नये अभिवादन राधे-राधे, राधा स्वामी, हरि-हरि, जय माता की आदि पुनः शुरु नहीं हो गये? जिस आर्यसमाज का आधार ही पाखण्ड का खण्डन करना है, मानव मात्र का कल्याण करना है, मानव को मानव बनाने के लिए चरित्र का निर्माण करना है, प्रत्येक को केवल एक ही ईश्वर की पूजा सिखाया है, आदि वो आधार ही समाप्त कर दिये, तो शिथिलता तो आएगी ही। आज का शिक्षित वर्ग आपकी बात सुनना चाहता है, क्या सही है, क्या गलत है, वो जानना चाहता है, परन्तु बताने वाले ही चुपकर बैठ गये, तो उन्हें तुम्हारे सौदे का पता कैसे चलेगा कि तुम्हारे पास क्या है। खण्डन लड़ाई नहीं है। वास्तविकता को उजागर करना खण्डन है। वैज्ञानिक अंधविश्वास आज भी ज्यों के त्यों सिर उठाये खड़े हैं। यदि तुम इन्हें नहीं बताओगे तो कौन बताएगा। इन सब को आर्यसमाज के अलावा कोई संस्था नहीं बताएगी।

अतः आर्यसमाज के प्रचार को केन्द्रित और सूत्रबद्ध करा, उसे प्रभावशाली बनाने के लिए साहित्य सृजन और प्रकाशन में कौन आगे बढ़ेगा? आर्यजनों, नवयुवकों और विश्वमानवों में वैदिक संस्कृति के भावों को भरने के लिए, उनमें प्रचार के लिए, उनमें जागृति उत्पन्न करने के लिए ही 'आर्यावर्त केसरी' जैसे पत्र जब तक आगे नहीं आएंगे, तब तक आर्यसमाज, आर्यजन अपने पुराने शान-ओ-शौकत को कैसे प्राप्त करेंगे?

अन्त में मैं पुनः कहना चाहता हूं कि आर्यजन स्वयं से प्रारम्भ कर, संध्या, यज्ञ, स्वाध्याय को जीवन में अपनाकर आर्यसमाज की पुरानी प्रतिष्ठा को लौटा सकते हैं।

इन्दिरा नगर, धामपुर
मोबा. : 9412855741

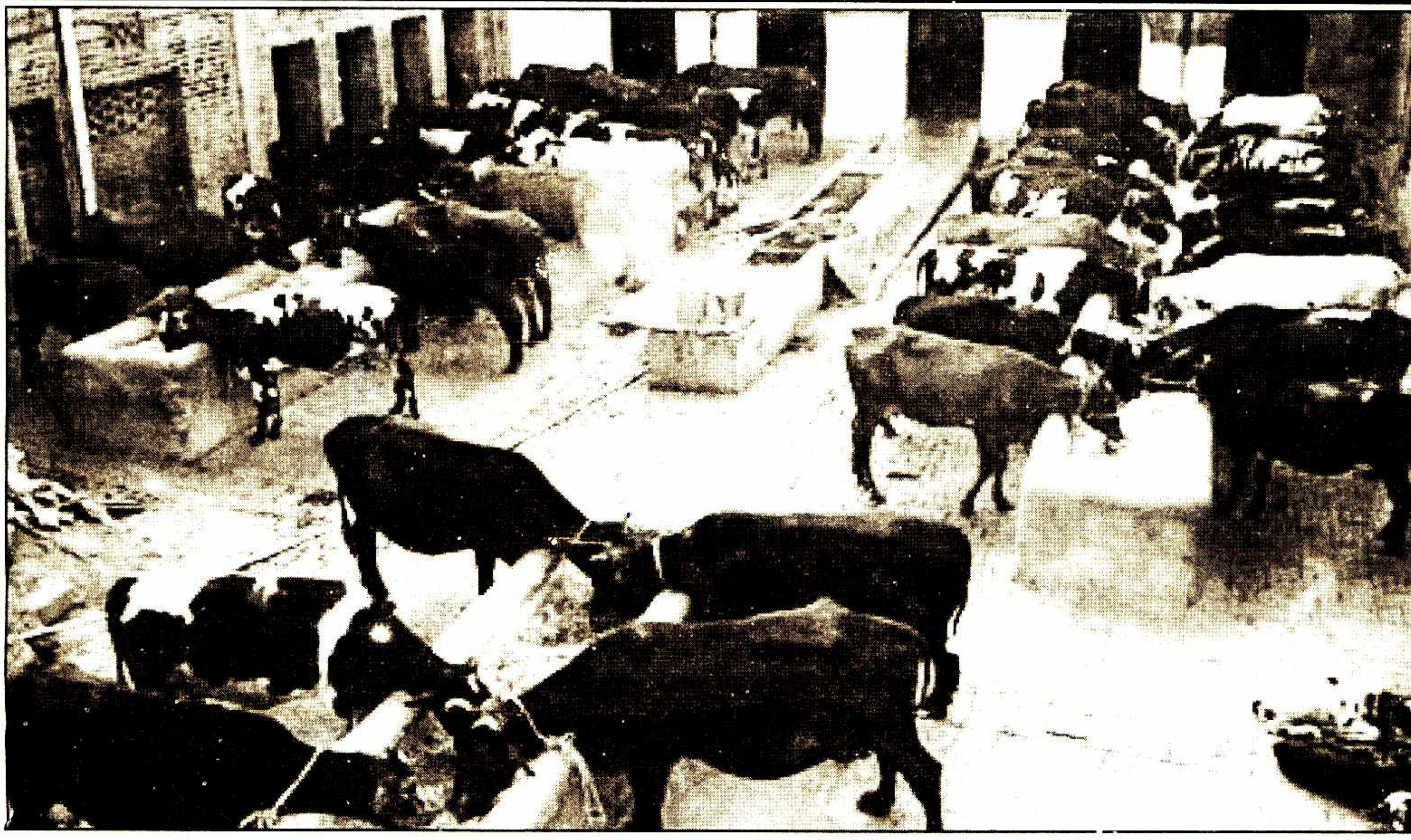

कैसी हों हमारी गोशालाएं- कृपया ध्यान दें

हमारे वैदिक चिन्तन में 'गावो विश्वस्य मातरः' गाय को सबकी माता कहा गया है। यहां हमारी गोशालाएं कैसी हों, इस पर यह आलेख प्रकाशित किया जा रहा है। सभी गोपालक भक्तों से अनुरोध है कि कृपया वे इस आलेख पर ध्यान दें।

गौओं के लिए एक ऐसा गोष्ठ बनाना चाहिए, जिसमें कुत्ते, मक्खी, मच्छर, डाँस, चोकर आदि का कोई भी विघ्न न हो। गोबर, गोमूत्र तथा बचे-खुसे घास-चारे का कूड़ा पड़ा न रह जाए। गौओं का गोष्ठ सारे देवताओं का निवास-स्थान है। उसमें मल नहीं डालना चाहिए। समझदार आदमी को चाहिए कि गोष्ठ को अपने शयन करने के कमरे की तरह साफ-सुथरा रखे। इसे सर्दी, वायु और धूल से समान भाव से प्रयत्नपूर्वक बचाए रखना चाहिए। गौ सामान्य प्राणी होने पर भी उसे अपने प्राणों के समान देखना चाहिए। गोशाला में मक्खी, मच्छर, और डाँस इत्यादि न होने पावें, इसलिए रोज सुगन्धित धूनी देनी चाहिए। जो गोपालक गोशाला में इस प्रकार धूनी नहीं देता, वह मक्षिकालीन नरक में जाता है, और नरक की भयानक मक्खियां उसके चमड़े को फाड़कर उसका रक्त पान करती हैं। गोबर और गोमूत्र से कभी घृणा न करें। सूखे चूने से गोशाला को सदा साफ रखें। गर्मियों में ठण्डे पेड़ों की छाया में जाड़े में गर्म और बिना कीचड़ के घर में तथा वर्षा और शिशिर काल में थोड़े गरम और जोर की हवा न आने वाली घरों में गायों को रखें। जूठन, कफ, थूक, मूत्र, विष्ठा आदि किसी भी प्रकार के मल को गोशाला में न छोड़ें। बछड़े को कभी लांघ के न जाएं। कुलटा स्त्री और नीच मनुष्यों को गोशाला में न जाने दें। जूता पहनकर अथवा हाथी, घोड़ा, गाड़ी या पालकी पर सवार होकर गायों के बीच में न जाएं।

प्रात:काल नमक, इसके बाद जल और घास खाने को देना चाहिए। रात के समय गोशाला में दीपक जलाना चाहिए। ऐसा विचार करना चाहिए कि गायें ताजे घास-चारे और जल को खा-पीकर अपने बच्चों के साथ आनन्द करें, सुखपूर्वक दूध दें, गर्मी-सर्दी-रोग के भय से छूटकर आराम से सोएं।

(साभार- हिन्दू सभा वार्ता)

भगवान को कैसे प्राप्त करें?

सत्यकेतु आर्य

शास्त्रों ने मनुष्य शरीर की बड़ी महिमा बतायी है। ईश्वर ने इस शरीर की रचना बड़े ही वैज्ञानिक तरीके से की है। इसमें सबसे उत्तम चीज विवेक है, जिससे सार-असार, नित्य-अनित्य, कर्तव्य-अकर्तव्य का बोध होता है। विवेक सर्वोपरि है। विवेक जितना अधिक होगा, मनुष्य उतना ही श्रेष्ठ होगा। महर्षि पिप्पलाद ने प्रश्नोपनिषद में मनुष्य के जीवन की सम्पूर्ण यात्रा की बड़ी गहन व्याख्या की है। उनके अनुसार सूर्य की उष्णता ही उदान प्राण का बाह्य रूप है। सूर्य के तेज और उदान प्राण के संयोग से ही यह तन चेतनवान है। उदान प्राण के चले जाने पर सूर्य की उष्णता भी इस तन को उष्ण नहीं कर सकती। ईश्वर ही परम तत्व है, ईश्वर ही पूर्ण सत्य है, हम सब मनुष्य रूप में उसी परम तत्व का अंश हैं, और इस जीवन का उद्देश्य परम तत्व को प्राप्त करना है। इसलिए विवेकी मनुष्य के मन में कुछ प्रश्न अवश्य उठते रहते हैं, जैसे परमात्मा क्या है? हमारा जन्म क्यों हुआ? इसका उद्देश्य क्या है? मनुष्य रूप में हमारा कर्तव्य क्या है? सच्चा ज्ञान कैसे मिल सकता है? जन्म-मरण से मुक्ति कैसे हो सकती है? दुख क्यों आते हैं? इनका निवारण कैसे हो सकता है? संसार में सत्य क्या है? ऐसे कई प्रश्न विवेकी मनुष्य के मन में उठते हैं। इनके उत्तर जीवन का उद्धार कर सकते हैं।

मनुष्य के जीवन में सबसे पहले यह आवश्यक है कि हर समय प्रभु के अस्तित्व का अहसास मन में बना रहे। मन में यह प्रश्न उठता रहे कि इन नदियों को बहाने वाला कौन है? रंग-बिरंगी तितलियों के पंखों को कौन रंगता है? कौन है, जो चन्द्रमा में मुस्कुराता है? किसका प्रकाश सूर्य के द्वारा संसार में फैलता है? असंख्य जीवों को जन्म कौन देता है? कौन सबको भोजन देता है? फूलों में रंग कौन भरता है? पर्वत किसने बनाये? आकाश को सितारों से कौन सजाता है? फूलों में रस किसका है? ऐसे अनेक प्रश्नों को मन में पैदा होने दीजिए। इससे आपके मन में ईश्वर के प्रति भावना जागेगी।

असंख्य प्राणी संसार में भोग भोगने के लिए आते हैं। एक दिन पटाक्षेप होता है। पर्दा गिर जाता है, देह छोड़कर मनुष्य न जाने कहां चला जाता है। लाख पुकारो, कितनी आवाजें दो, जाने वाला लौटकर नहीं आता। यह पर्दा कौन गिराता है। इंसान के दिल में जो धड़कन चल रही है, वह किसकी शक्ति है। इस संसार में गति, स्पन्दन, परिवर्तन, सागर की लहरें उठती हैं, सिमटती हैं। किस शक्ति से यह सब होता है? उस अज्ञात शक्ति को जानने के लिए, पाने के लिए भाव हमेशा मन में बनाए रखिए। उसके प्रति निरंतर श्रद्धा बनाए रखिए। ईश्वर के अस्तित्व, मनुष्य के परमात्म तत्व से संबन्ध, सृष्टि रचना, मानव जीवन का कर्तव्य बोध, ऐसे हजारों पक्षों का ज्ञान हमें भले ही अलग-अलग स्रोतों से मिलता है, किंतु समेकित रूप में यही भारतीय संस्कृति है। यही संस्कृति, यही ज्ञान हमें सत्य की ओर ले जाता है। जो मनुष्य अनन्य भाव से नित्य प्रति पूर्णतया समर्पित होकर प्रभु की स्तुति करता हुआ ईश्वर का स्मरण करता है, भगवान उसे सरलता से मिल जाते हैं। भगवान को पाने के लिए मन में केवल भगवान को बिठाइए, संसार में रहिए, किंतु संसार को मन में मत बसा लीजिए। परमात्मा का नूर चारों ओर बरस रहा है, फूलों में, नदियों में, तितलियों के रंग-बिरंगे पंखों में। समस्त सृष्टि उसकी सुन्दर रचना है। इसे पर्यटक बनकर भोगो। दृष्टिदोष से बचो, दृष्टि बदलो, सृष्टि बदल जाएगी। सुपात्र बन जाइए, आनन्दित एवं मुदित रहिए, स्वर्ग आपके पास है, आप प्रभु के पास हैं, प्रभु आपके पास हैं। श्रृंगार करो, कृत्रिम चीजों का नहीं, माथे पर शीतलता का श्रृंगार करो। होठों पर मुस्कान का श्रृंगार करो, तो आप पर ईश्वर की कृपा अवश्य होगी।

-२३/३, शास्त्रीनगर,
निकट- काली मठिया मन्दिर, कानपुर
मोबा.: 09839119683

स्वास्थ्य जगत

मोटापा दूर करे 'अंजीर'

विटामिन ए, बी और कैल्शियम, फास्फोरस, पोटेशियम जैसे पौष्टिक तत्वों से भरपूर है। यह कई अन्य बीमारियों में भी लाभप्रद है। अंजीर में आयरन व कैल्शियम भरपूर है। यह एनीमिया में फायदेमंद है। कब्ज की समस्या से भी मुक्ति दिलाता है।

- रक्त संचार के लिए दो अंजीर काटकर रात को एक गिलास पानी में भिगो दें। सुबह उठकर उसका पानी पीएं और अंजीर का खा लें।
- ताजे अंजीर खाकर ऊपर से दूध पीना अत्यंत शक्तिवर्द्धक होता है।
- अंजीर का नियमित सेवन हाइपरटेंशन की समस्या में लाभप्रद है।
- सूखे अंजीर दूध व मिश्री के साथ लगातार एक सप्ताह सेवन करें तो खून शुद्ध होता है।
- दमे में रोज सुबह सूखे अंजीर का सेवन करें। पेट खराब है और उस कारण शरीर गर्म रहता है, तो अंजीर का सेवन लाभकारी साबित होगा।

(हिन्दू सभा वार्ता से साभार)

हर तरह के बुखार को मिटा देने वाला नुस्खा

नीम के पत्ते- 100 ग्राम, सोंठ- 10 ग्राम, काली मिर्च- 10 ग्राम, पिप्पली- 10 ग्राम, हरड़- 10 ग्राम, बहेड़ा- 10 ग्राम, आंवला- 10 ग्राम, सौंचल नमक- 10 ग्राम, विड नमक- 10 ग्राम, सैंधव नमक- 10 ग्राम, सज्जीखार- 20 ग्राम, जवाखार- 20 ग्राम, अजवायन- 50 ग्राम। इन सारी औषधियों का महीन चूर्ण बनाकर आपस में खूब अच्छी तरह मिलाकर रखें, दवा तैयार है। इस चूर्ण की एक से तीन ग्राम तक मात्रा जल से देनी चाहिए। इस औषधि को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए चूर्ण के बराबर मात्रा में शंखभस्म मिलाई जा सकती है।

(साभार- आयुर्वेद धन्वन्तरि मासिक, समाचार पत्र)

शीघ्र नवीन संस्करण के रूप में प्रकाश्य

'अभिनव मधुशाला'

कविता में शराब विरोधी एक सशक्त आन्दोलन

: रचनाकार :

शिव अवतार रस्तौगी 'सरस'

अब नये कलेवर और नये मुक्तकों के साथ शीघ्र पढ़ें और शराब विरोधी आन्दोलन में योगदान दें।

आयुष्मान् भव

(दीर्घ आयु प्राप्त करो)

इस स्तंभ में स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती 'वेदभिक्षु' द्वारा लिखित पुस्तक 'आयुष्मान् भव' में संग्रहीत वेदमंत्र अर्थ सहित प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु'

(२४)

उज्ञा देवी

-अस्मे श्रेज्ठेभिर्भानुभिर्वि भाहयुज्ञो देवी प्रतिरन्ती न आयुः।
इज़ं च नो दधती विष्ठववारे गोमदष्ठवावद् रथ वच्च्यः राधः॥

(ऋग्वेद, ७/७७/५)

पदार्थ :- (अस्मे) हमारे लिए, (श्रेज़्ठेभिः) श्रेज़्ठों से युक्त, (भानुभिः) प्रकाष्ठामान किरणों के साथ, (विभाहि) विष्ठोज़ द्युति के साथ, (उज़ः) हे उज़ा!, (देवी) दिव्य प्रकाष्ठिका!, (प्रतिरन्ती) बढ़ाती हुई, (नः+आयुः) हमारी आयु को। (इज़ं) अन्न या प्राणष्ठाक्ति, (च) तथा (नः) हमारे लिए, (दधती) धारण करती हुई या प्राप्त कराती हुई, (विष्ठववारे) सम्पूर्ण भोग्य पदार्थों को, जैसे-, (गोमद+अष्ठवावत्+रथवत्, च) गोधन, अष्ठवधन तथा रथादि वाहन ष्ठाक्तियाँ और, (राधः) अन्य ऐष्ठवर्य साधनों को।

भाव :- उज़ा अर्थात सूर्योदय से दो घण्टे पूर्व का पवित्र काल, और ऐसे काल में जाग जाना एक महान कार्य है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का चिन्तन ऐसे समय हो, तो मनुज़्य नीरोग होकर परम भाग्यष्ठाली होता है। यही काल उज़ाकाल कहलाता है। इसलिए इस उज़ाकाल में जागकर अपनी आयु को बढ़ाना चाहिए।

(२५)

इन्द्र और वरुण

-इन्द्रावरुणा सौमनसमदृप्तं रायस्पोषं यजमानेषु धत्तम्।
प्रजां पुष्टिं भूतिमस्मासु धत्तं दीर्घायुत्वाय प्रतिरतं न आयुः॥

(ऋग्वेद, ८/५९/७)

पदार्थ :- (इन्द्रावरुणा) इन्द्र और वरुण, (सौमनसं+अदृप्तं) प्रसन्न मन वाले और अभिमान रहित, (रायस+पोषं) धन और पोषण शक्ति को (यजमानेषु) यजनशील= परोपकारी जनों में, (धत्तम्) धारण कराते है। (प्रजां पुष्टिं) प्रजा की पुष्टि= रक्षा को, (भूतिम्) ऐश्वर्य को (अस्मासु) हम सब में, (धत्तं) प्राप्त करावे, (दीर्घायु त्वाय) लम्बी आयु के लिए (प्रतिरन्त) बढ़ाये, (नः) हमारी, (आयुः) उम्र को।

भाव :- प्रसन्न मन वाले, तथा जिन्हें किसी बात का घमण्ड नहीं है, सम्पन्न, पालन-पोषण में सक्षम, उत्तम सन्तान वाले, ऐश्वर्यशाली और परोपकारी जनों की आयु दीर्घ होती है।

[इन्द्र और वरुण = इन्द्र = परमात्मा, वरुण = वरणीय परमात्मा तथा ऐश्वर्यशालीजन और वरणीय विद्वान जन]

(२६)

यज्ञों का स्वामी

ईशे या विश्वस्या देववीतेः ईशे विश्वायुरूषयो व्युष्टौ।
आ यस्मिन्मना हवींष्यग्नौ अरिष्टरथः स्कभ्नाति शूषैः॥

(ऋग्वेद, १०/६/३)

पदार्थ :- (ईशे) स्वामी या पति है, (यः) जो, (विश्वस्याः) सम्पूर्ण, (देववीतेः) यज्ञ = उत्तम कर्मों का, (ईशे) स्वामी है, (विश्वायुः) पूर्ण आयु वाला होकर, (उषसः) उषा कालों में, (वि-उष्ठौ) उत्तम यज्ञों में। (आ-यस्मिन्) सर्वत्र जिसमें, (मना) मननीय या चिन्तन करने योग्य, (हवीषि) हवियों के द्वारा, (अग्नौ) अग्नि में, (अरिष्ठ रथः) दुख रहित वाहन न, (स्कभनाति) रखता है, (शूषैः) दुष्ट शक्तियों से।

भाव :- जिसका शरीर रूपी रथ सर्वथा रोग रूपी शत्रुओं से सुरक्षित है, वह सर्वथा सुखी है और लम्बी आयु को प्राप्त करता है। जिसका जीवन पवित्र यज्ञ कर्मों में संलग्न रहता है, वह अपने शरीर रूपी रथ पर जीवन की यात्रा को भली प्रकार पूर्ण करता है। यज्ञमय जीवन श्रेष्ठ है।

●आर्यसमाज, बिहारीपुर, बरेली (उ.प्र.) चलभाष : 09412372179

योगेश्वर श्रीकृष्ण

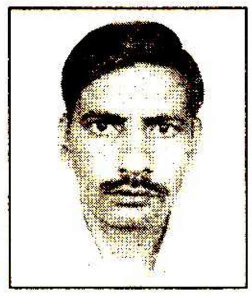

सुमन कुमार वैदिक

भगवान श्रीकृष्ण भारतीय संस्कृति परम्परा के शीर्षस्थ महापुरुषों में आते हैं। जो महान, वेदज्ञ, याज्ञिक, वैज्ञानिक के साथ षोडश कला धारी थे। उनके विषय में महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं "देखो महापुरुषों के सदृश्य था। जो कुछ लांछन योगेश्वर पर लगाये हैं वह भागवतकार के हैं।" भगवान कृष्ण के चरित्र पर भक्तिकाल में सूरदास ने अपने भजनों के माध्यम से बिगाड़ किया।

भगवान कृष्ण का जन्म ऊँचे-ऊँचे महलों में नहीं कारागार में हुआ था। प्रारम्भिक जीवन संकट में गुजरा। जब कंस ने यह जाना कि तेरी बहन देवकी का पुत्र ही तेरी मृत्यु का कारण बनेगा, तभी से उसने देवकी और वासुदेव को कारागार में डाल दिया और जो भी शिशु देवकी के गर्भ में उत्पन्न होता कंस उसे नष्ट कर देता।

किन्तु जब देवकी के गर्भ में भगवान कृष्ण की पुनीत आत्मा का प्रवेश हो गया तब आध्यात्मिक विज्ञान के ज्ञानी वासुदेव उस आत्मा से वार्ता करने पर उनके हृदय में भाव उत्पन्न हुआ कि यही सन्तान हमें कारागार से मुक्त करायेगी। जब देवकी का गर्भ छह माह का हो गया तब माता स्वतः ज्ञान की वार्ता और मंत्रों का उच्चारण करने लगी। उस समय देवकी स वासुदेव ने कहा कि यह पुण्य आत्मा जो अन्तरिक्ष से आयी है उसका समन्वय तुम्हारे मस्तिष्क से हो रहा है। तुम्हारे गर्भ से एक योगी का जन्म होने जा रहा है। गर्भवती देवकी गायत्री का चिन्तन करती तथा भोजन को 101 गायत्री पाठ कर शुद्ध कर तब ग्रहण करती। इन विचारों से शुद्ध किये परिवेश में भगवान कृष्ण का जन्म हुआ।

भगवान कृष्ण जो देवकी की आठवी सन्तान थे। उसके लिए राजा कंस के हृदय में तीव्र वेदना थी कि इस जन्म लेते ही नष्ट करना है परन्तु परमात्मा के भक्त वासुदेव के हृदय में दूसरे भाव जागृत हुए उन्होंने देवकी से कहा कि देवी यदि हम कारागार में सुन्दर पुत्र को जन्म दे सकते हैं। तो बिना समय के उसकी मृत्यु नहीं हो सकती। उस समय कंस के अत्याचारों समाज में एक क्रान्ति आयी और क्रान्तिवादियों ने कहा कि क्या करें? इसने तो अपने संबंधियों को भी कारागार में स्थिर कर लिया है, वह हमें भी क्यों नहीं मृत्यु दण्ड देगा? वह परमात्मा से याचना करने लगे कि हे प्रभु! तू इनके आठवें पुत्र की अवश्य रक्षा कर। नयी-नयी योजना बनने लगीं। कृष्ण के जन्म से पूर्व वासुदेव-देवकी को यशोदा ने संदेश भेजा कि मैं भी गर्भवती हूँ। अपनी सन्तान तुम्हें अर्पित कर तुम्हारी सन्तान की रक्षा कर सकती हूँ। उन दोनों का एक प्रकार का संकल्प हो गया।

जब भगवान कृष्ण का जन्म हुआ तो उस समय कारागार में जितने भी सेवक थे वे सब गाढ़ी निद्रा में जैसे सो गये। उनके सहयोग से वासुदेव अपने नवजात पुत्र को यमुना पार यशोदा को दे दिया तथा उसी रात यशोदा के यहां उत्पन्न कन्या को यशोदा ने अपने पति को वासुदेव के लिये दे दिया। देवकी ने राष्ट्र रक्षा के लिए यशोदा के महान त्याग को स्वीकार कर लिया। प्रातः होते ही कंस ने उसे नष्ट कर दिया।

कुछ दिन पश्चात् कंस ने सुना कि देवकी का पुत्र यशोदा के यहां पल रहा है तो उसने अपने नाना योद्धाओं गुप्तचरों के माध्यम से बालक कृष्ण को नष्ट करने का प्रयास किया। परन्तु वह कैसे नष्ट हो सकता था? महापुरुषों की महिमा जीवन, इन्द्रियां और नेत्र अलौकिक होती है। भगवान कृष्ण ने कंस के अनेक सेवकों को नष्ट किया परन्तु स्वयं ज्यों के त्यों रहे। वृन्दावन के गृहों से कंस के गृह में दूध दही जाता था। उसे रोका और कहा कि इसे मुझे पान कराओ। मुझे पान कराने का तात्पर्य था कि गृह में ही इसका उपयोग होना चाहिए। राजा के यहां इस प्रकार का कर नहीं जाना चाहिए। बाल्यकाल से उनकी तीव्र बुद्धि थी उनका शरीर बलिष्ठ और योगिकता में पारंगत था।

आज मान्यता है कि भगवान कृष्ण ने चार-पाँच वर्ष की अवस्था में काली दह में जाकर नाग के रक्त को बहाया। यह तो एक अलंकारिक वार्ता है। नाथने का व्यवहारिक दृष्टि से अर्थ है अपने में मिलान करना। उस काल में यहां एक नाग नाम का सम्प्रदाय अन्य राष्ट्र से सुरक्षा पाने के लिये आ गया। भगवान कृष्ण ने राष्ट्र की पद्धति और ज्ञान के अनुसार इस नाग सम्प्रदाय का मन्थन किया अर्थात् नाथ दिया। नाथने का अभिप्राय आश्रय देना, विचार देना। यह सब मानव इसी देश की मूलधारा में परिणत हो गये। इनके वंशज नागपाल इत्यादि से जाने जाते हैं।

यौगिकवाद की दृष्टि से मानव में जब काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इन पाँच अवगुण में से यदि कोई भी आ जाता है तो सर्प का प्रभाव आ जाता है। भगवान कृष्ण पाँच फनों वाले शेषनाग रूपी इन पाँच अवगुणों पर योगाभ्यास के द्वारा अपनी प्रवृत्ति और विवेक के द्वारा इन फनों के ऊपर नृत्य करने लगे। उन्होंने जब नाग का मन्थन किया उसको अपने में रत कराने की उनकी यौगिक प्रक्रिया बन गयी थी।

पच्चीस वर्ष तक भगवान् कृष्ण सान्दीपनि ऋषि के पास अध्ययन करते रहे उसके पश्चात् उनका संस्कार हुआ। उनका जीवन पवित्रता में परिणत रहा। भगवान कृष्ण के विषय में आज कहा जाता है कि उनकी सोलह हजार साठ पत्नियां थीं। बाल्यकाल में उनहोंने सोलह हजार वेद की ऋचायें कण्ठस्थ की थीं। उसी में रमण करते थे। समाज ने यह नहीं जाना और भागवत के अनुसार स्वीकार कर लिया कि सोलह हजार गोपिकाएं थी। उसमें वे नृत्य करते रहते थे। नौ ब्रह्म की षोडश कलाओं, आठ चक्र, नौ द्वार इन सब क्रिया कलापों को भगवान कृष्ण जानते थे। उन्होंने बारह-बारह वर्षो के तप किये। मुद्रिका बनाने का ज्ञान उन्हें था। ऐसे तपस्वियों को देवियों में विनोद करने वाला कहना यह अज्ञान है। न जानकर अर्थो का अनर्थ करने से महापुरुषों के जीवन की आभा समाप्त हो जाती है। षोडश कलायें जो भगवान कृष्ण जानते थे क्या थीं? सबसे प्रथम प्राची दिग्, दक्षिण दिग्, प्रतीचि दिग्, उदीचि दिग् है। इसके बाद पृथ्वी कला, वायु कला, अन्तरिक्ष कला और समुन्द्र कला है। इसके पश्चात् की कलाएं हैं- सूर्य कला, चन्द्र कला, अग्नि कला और विद्युत कला जिनको जानने को सदैव तत्पर रहते थे। मन कला, चक्षु कला, श्रोत्र कला और घ्राण कला इन सबको वह जानते थे। इसीलिए योग और राष्ट्रीय विधान में उनकी इतनी गति थी। भगवान राम बारह कला जानते थे। अन्तिम चार कलाओं पर उनका अधिकार नहीं था। आओ हम सब योगेश्वर कृष्ण के वास्तविक स्वरूप को समझ कर विश्व कल्याण के पथ पर अग्रसर हों।

लेख का आधार ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त का प्रवचन

महासम्मेलन २४ से

दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 24 से 26 जनवरी 2014 तक रामलीला मैदान पी. यू. ब्लॉक, पीतमपुरा में 251 कुण्डीय विराट यज्ञ एवं अखिल भारतीय महासम्मेलन सम्पन्न होगा। यह जानकारी देते हुए परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष व मुख्य संयोजक डॉ. अनिल आर्य ने श्रद्धालु जनता से परिजनों व ईष्टमित्रों सहित भारी संख्या में महासम्मेलन में पधारने की अपील की है।

जनवाणी

आर्यावर्त केसरी है आर्यत्व का प्रतीक

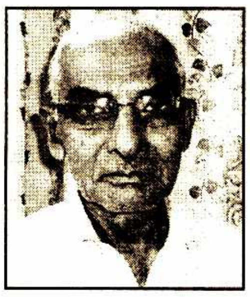

आर्यावर्त केसरी की प्रत्येक वर्षगांठ पर प्रकाशित होने वाली वर्षगांठ स्मारिका अपने आप में अनूठा एवं पावन कार्य है। इससे जहां वैदिक ज्ञान के आलोक का प्रसार होगा, वहीं विद्वान लेखकों, कवियों और मनीषियों का परिचय भी प्राप्त होता है। विशेषांकों में विज्ञापन जहां आर्थिक स्रोत के रूप में सहायक हैं वहां ये विज्ञापन पाठकों को विज्ञापन दाताओं के परिचय में भी सहायक हैं। लेखकों का पता एवं सम्पर्क सूत्र- दूरभाष, चलभाष आदि प्रकाशित होने से उनसे सम्पर्क सहायकता सहज ही प्राप्त हो जाती है। यह भी पत्र का एक अनूठा प्रयास है।

मैं आर्यावर्त केसरी के पाठकों से यह अपील करता हूं कि वे अपने दायरे के परिचितों, ईष्टमित्रों एवं आर्य समाजों को 'आर्यावर्त केसरी' का ग्राहक अवश्य बनावें, क्योंकि कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की दिशा में यह भी एक सार्थक कदम है।

अन्त में, मैं व्यक्तिगत रूप से 'आर्यावर्त केसरी' एवं केसरी परिवार के स्वर्णिम भविष्य की कामना करता हूँ।

महोदय,

आर्यावर्त केसरी के माध्यम से आप जो सामाजिक सेवा कर रहे हैं, एतदर्थ आपका धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। पत्र प्रकाशन से पूर्व आपके मन में जिस पुनीत भावना एवं संकल्पना ने जन्म लिया होगा, वह निश्चय ही श्लाघनीय एवं वन्दनीय है। गोमुख से निसृत गंगा के समान पवित्र आज अपने आप में 'आर्यावर्त केसरी' आर्यत्व का प्रतीक बन गया है। विषय, कलेवर एवं आर्यजगत की गतिविधियों से अवगत कराने वाला मुख्य स्रोत बन गया है। बीच-बीच में विशेषांकों का प्रकाशन, आर्यजगत के द्वारा किये गये, अतीत के विविध प्रसंगों एवं आर्यजगत के गौरवशाली मानदण्डों को प्रस्तुत करने में आर्यावर्त केसरी सफल सिद्ध हुआ है।

अपने आप में अनेक विधाओं को समाहित किये हुए, निश्चय ही ये विशेषांक-पत्र के प्रधान सम्पादक आदरणीय डॉ. अशोक कुमार आर्य के बहुआयामी व्यक्तित्व को व्यक्त करने में सहज ही समर्थ है।

डॉ. सीताराम शर्मा बन्धु
एम.ए. (द्वय),
एल.एल.बी., पी-एच.डी.
विवेक सदन, खत्री कूंचा-०२,
जट बाजार, अमरोहा
मोबा. : 9411811992

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महोदय,

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उद्घोष बोलने मात्र से हमारा कल्याण नहीं होने वाला है। जब तक इस दिशा में सार्थक कदम नहीं उठाये जाएंगे, यह काम संभव नहीं। इस काम को करने के लिए आचार्य परमदेव मीमांसक ने अभियान शुरु कर दिया है। और लाखों की संख्या में नौजवान आर्यों का निर्माण किया है। इसके लिए आर्यसमाज के सुयोग्य सैंकड़ों विद्वान और विदुषियां दो दिन का सत्र लगाकर नवयुवकों व नवयुवतियों को आर्यत्व का प्रशिक्षण दे रहे हैं। उनका प्रशिक्षण देने का ढंग इतना जोरदार है कि जो बिल्कुल आर्यत्व से परिचित नहीं हैं, वे भी दो तीन सत्रों में पूर्ण रूप से वैदिक धर्मी बन जाते हैं।

इन सत्रों को लगाने के लिए आचार्य जी के शिष्य किसी प्रकार का शुल्क नहीं लेते। इन सत्रों को लगाकर आर्यों की घटती संख्या को शीघ्र सम्भल दिया जाए। हमारा लक्ष्य हो कि हम प्रत्येक गांव में इन सत्रों के माध्यम से आर्यों का संगठन तैयार करें, इसके लिए प्रत्येक आर्य को कटिबद्ध होना है। यदि देश बचाना है, तो अपने नौजवानों को शीघ्र संस्कारित करना होगा। इस राष्ट्रयज्ञ में शीघ्र कूदना होगा। इसके बिना हम कुछ नहीं कर पाएंगे। हमारी संख्या दिन प्रतिदिन घट रही है।

डॉ० रमाशंकर आर्य

आवश्यकता है

गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) हरियाणा में एक प्रशिक्षित विज्ञान अध्यापक की। सेवामुक्त अध्यापक को प्राथमिकता। वेतन योग्यता एवं अनुभव के आधार पर।

-रामस्वरूप शास्त्री
(मुख्याधिष्ठाता)
गुरुकुल आर्यनगर, हिसार
मो0- 09466403222, 09466613413

तुरन्त आवश्यकता है

'आर्यावर्त केसरी' के लिए कार्यालय अधीक्षक व उपसंपादकों की। सेवानिवृत्त एवं अंशकालिक भी सम्पर्क करें-

डॉ० अशोक कुमार आर्य
सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
अमरोहा (उ.प्र.)
05922-262033, 09412139333

श्री सूक्त में लक्ष्मी

डॉ० सत्यदेव आजाद

वैदिक श्री सूक्त में विष्णु वल्लभा लक्ष्मी का स्वरूप वर्णित है, जिससे भगवती लक्ष्मी की वेद मूलकता सिद्ध होती है। अन्य देवों की भांति लक्ष्मी भी एक वैदिक देवता है, जो निखिल सृष्टि की अधिष्ठात्री देवी के रूप में वर्णित है। निरुक्तकार यास्क ने 'लक्ष्मी लीमाद्वा लक्षणाद्वा' कह कर लक्ष्मी शब्द की निरुक्ति की है, जिसका आशय है- लक्ष्मी वह है, जिसे प्राप्त किया जाए और जो सुलक्षणवा वाली हो। इसीलिए श्रीसूक्त में वैदिक ऋषि ने ऐसी लक्ष्मी की प्राप्ति की कामना की है, जो हिरण्यवर्णा है। सुवर्ण और रजत की माला धारण किए हुए है। चन्द्रवत् प्रभापूर्ण और आह्लादकारिणी है तथा हिरण्यमयी है। जातवेदा अग्निदेव से ऐसी लक्ष्मी को प्राप्त कराने की कामना करता हुआ ऋषि कहता है- "हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्ण रजत सृजाम्। चन्द्रां हिरण्यमयी लक्ष्मीं जातवेदो ममावह।।

पुनः वह अनपायिनी लक्ष्मी को प्राप्त करने की प्रार्थना करता है। जिस लक्ष्मी के रहते स्तोता, गो, अश्व, पुत्र, पौत्र, मित्र, भृत्य आदि को प्राप्त कर सके- ताम् आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।

लौकिक संस्कृत साहित्य में लक्ष्मी को कमलालया कहा गया है। कमल ही उनका निवास स्थान है। यह 'लक्ष्म्यष्टक' के एक श्लोक से सिद्ध होता है- पद्मासन स्थिते देवि परब्रह्म स्वरूपिणी। परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मिन्मोऽस्तुते।।

लक्ष्मी विषयक यह धारणा वेदमूलक है। क्योंकि श्री सूक्त में जिन लक्ष्मी देवी का आह्वान किया गया है, वह पद्मवर्णा हैं और पद्म में विराजमान है- पद्मेस्थितां पद्मवर्णा तामिहियह्वये श्रियम्।"

यह श्रीसूक्त की लक्ष्मी देवी चन्द्रवत् प्रकाशमान और यश से जाज्वल्यमान है। मानवों की कौन कहे, स्वर्गस्थ इन्द्रादि देवता भी इन्हीं की आराधना-उपासना करते हैं। ऐसी लक्ष्मी की शरण में जाना चाहिए और यह कामना करनी चाहिए कि वे अलक्ष्मी का सर्वथा विनाश करें। दीपावली पर्व में भी प्रदोष काल में लक्ष्मी का पूजन आह्वान आदि होता है। और रात्रि के अन्तिम प्रहर में दारिद्रय का निस्तारण होता है। आज भी प्रत्येक घर में जो कुछ भी किया जाता है, वह अनादि काल से परम्परागत होता चला आ रहा है। श्रीसूक्त की लक्ष्मी एक ओर चन्द्रवत् प्रभापूर्ण और आह्लादकारिणी है, तो दूसरी ओर सूर्य के समान प्रखर तेज से भी युक्त है। वे अपने इसी तेजोमय रूप से अलक्ष्मी का नाश करती है। उनके इस द्विविध स्वरूप का दर्शन भी इसी श्रीसूक्त में हो जाता है। सूर्यस्वरूपा तथा चन्द्रस्वरूपा उभयविधि लक्ष्मी की कामना करते हुए वैदिक ऋषि कहते हैं- "सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मी जातवेदो ममावह" तथा "चद्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मी जातवेदो ममावह" लोक में लक्ष्मी का विल्व के साथ भी संबन्ध स्थापित किया जाता है। बिल्व वृक्ष को श्रीवृक्ष और बिल्व फल को श्रीफल कहा जाता है। वामन पुराण में कात्यायनी देवी से शमी वृक्ष और लक्ष्मी के कर से विल्व वृक्ष की उत्पत्ति बतायी गयी है- "कात्यायन्याः शमी जाता। विल्बौ लक्ष्म्याः करेऽभवत्।"

इस लौकिक और पौराणिकी धारणा का उद्गम श्रीसूक्त का यह मंत्र है, जिसमें आदित्यवर्णा लक्ष्मी देवी की तपस्या से विल्व वृक्ष का उत्पन्न होना बताया गया है- "आदित्य वर्णे तपसोऽधिजातोवनस्वविस्तव वृक्षोऽव विल्वः"। इस लक्ष्मी को स्तोता ऋषि ने अनेक ग्रन्थों में यही प्रार्थना की है कि वे सभी प्रकार की समृद्धि उसे दें और असमृद्धि को उनसे दूर रखें। यह है श्रीसूक्त में वर्णित लक्ष्मी देवी का स्वरूप, जिसके आधार पर आगे चलकर लौकिक संस्कृत साहित्य में उनका रूप विग्रह चित्रित किया गया है। उनके इसी श्रीविग्रह का ध्यान और आराधन हम सब भारतीय प्रतिवर्ष दीपावली पर्व पर सौख्य समृद्धि और शुभ शांति हेतु अत्यंत आस्था और श्रद्धा के साथ करते हैं।

-२३१३, अर्जुनपुरा, डीग गेट, मथुरा
मोबा. : 9897975850

उन्नति, अवनति और भाग्य

पंकज कुमार

योगिराज श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि संसार में कोई भी प्राणी एक क्षण भी बिना कर्म के नहीं रह सकता अर्थात् प्राणी सदैव कोई न कोई कर्म अवश्य ही करता रहता है। गीता के अनुसार प्राणी को अनासक्त भाव से कर्म करना चाहिए, अर्थात् फल की इच्छा किए बिना कर्म करते रहिए। किन्तु कुछ लोग कहते हैं कि मनुष्यों की उन्नति और अवनति में भाग्य ही कारण है। एक बार नष्ट हुई जीवन की आशा वाले पिटारी में दबे हुए शरीर वाले मुख के कारण शिथिल इन्द्रियों वाले सर्प के मुख में रात्रि में पिटारी में छेद करके चूहा स्वयं गिर गया। उसे मांस से तृप्त होकर वह सर्प शीघ्रता से उसी मार्ग से बाहर निकल गया। यह एक भाग्यशाली सर्प ही था, जिसे बिना कर्म किये भोजन और जीवन दोनों मिले। इसी प्रकार एक व्यक्ति ने एक भाग्यहीन व्यक्ति की कहानी इस प्रकार सुनाई कि एक बार एक गंजा सूर्य की किरणों द्वारा मस्तक पर तपाया हुआ भाग्यवश ताड़-वृक्ष के नीचे गया। वहां भी गिरते हुए विशाल ताड़ के फल से उसका सिर आवाज के साथ फट गया। लोग कहते हैं कि प्रायः भाग्य रहित मनुष्य जहां जाता है, वहां विपत्तियां आ ही जाती हैं। इसीलिए भाग्यवादी लोग कहते हैं कि भाग्य की शरण ही अच्छी है, पौरुष व्यर्थ है, इस पौरुष को धिक्कार है।

वास्तव में, ऐसा नहीं है और न ही इसका यह तात्पर्य है कि हम भाग्य के सहारे हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाएं। बल्कि हमें फल की इच्छा किये बिना ईश्वर का स्मरण करते हुए कर्म करते रहना चाहिए। हम जैसा कर्म करते हैं उसी के अनुरूप हमें फल मिलता है। इसीलिए गीता में कहा गया है कि 'अवश्यमेव भुक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं।'

प्रवक्ता- दीवान कॉलेज ऑफ एजुकेशन, मेरठ

संगीत संध्या ४ को

महेन्द्र भाई
नई दिल्ली।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द के बलिदान दिवस पर 4 नवम्बर को 'एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम' से एक भव्य संगीत संध्या दिल्ली हाट, निकट- मैट्रो स्टेशन, नेताजी सुभाष पैलेस, पीतमपुरा में होगी। इस अवसर पर नरेन्द्र आर्य सुमन व सुदेश आर्या, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, प्रदीप तायल व दर्शन अग्निहोत्री विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे।

आयोजन समिति ने श्रद्धालु जनता जनार्दन से कार्यक्रम में भारी संख्या में पधारते हुए धर्म लाभ उठाने की अपील की है।

ऋषिभक्त आर्यो! स्वर्णिम अवसर न खोओ!

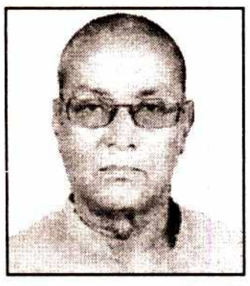

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु'

सृष्टि, वेद एवं मानवों की प्राचीनता को जानने का, हम वेदानुयायियों के पास एक विज्ञान सम्मत उपाय (साधन) है जिसको तिथिपत्रक कहा जाता है। सूर्य-चन्द्र इस (पत्रक) के साक्षी हैं। इस तिथि पत्रक (आधुनिक भाषा में पंचांग) के माध्यम से हम न केवल तिथि नक्षत्र ही जानते हैं, अपितु खगोलस्थ पृथिव्यादि ग्रह, चन्द्रादि उपग्रह, सूर्यादि नक्षत्रों की स्थिति-गति को भी जान लेते हैं। ग्रहोपग्रहनक्षत्रादि के यथार्थ ज्ञान के बिना हमारा न तो कृषि, ऋतुचर्या, स्वास्थ्यादि का कार्य सुचारू रूप से चल सकता है और न हमारे सन्ध्या (योग), देवयज्ञ, संस्कार, पूर्णिमा, अमावस्य, युगादि (संवत्सरादि), श्रावणी उपकर्म, उत्सर्ग, विजयदशमी, दीपमालिका, शिवरात्रि, होली, ऋतु, उत्तरायण, दक्षिणायण, सूर्यचन्द्रग्रहण आदि प्राकृतिक पर्व और श्रीराम नवमी, सीताष्टमी, श्रावणी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, लेखराम तृतीय आदि ऐतिहासिक पर्व ही यथावत सम्पन्न हो सकते हैं। इससे हमको यह बुद्धि में आ जायेगा कि तिथिपत्रक का हमारे जीवन से कितना गहन एवं व्यापक सम्बन्ध है।

एक कटु सत्य का पक्ष भी है। वह है अवैज्ञानिक, अन्धविश्वास और असत्य का पक्ष। चाहे ऋषि दयानन्द के अनुयायी ही क्यों न हों, किसी न किसी पंचांग से शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, करण, योग व मुहुर्त आदि तो देखते ही हैं। कितने ऐसे ऋषि, दयानन्द भक्त, वेद भक्त, सत्य भक्त हैं जो मुहुर्तों को बहिष्कृत करके ही व्यापार प्रारम्भ करते हों, नूतन-गृह प्रवेश या पुत्र-पुत्रियों का विवाह आदि करते हों? इस बात को यहीं छोड़ते हैं।

यथार्थ तिथि-पत्रक जिनमें सूर्य-चन्द्रादि ग्रहों की स्थिति, गति, उत्तरायण या तपस (माघ) मासारम्भ, दक्षिणायण या नभस (श्रावण) मासारम्भ आदि ठीक-ठीक दिये हों, ऐसे कितने हैं? स्वर्गीय गुरुवर पण्डित पुरुषोत्तम जी जोशी मुझे ज्योतिष पढ़ाते समय यह कहा करते थे कि 'धार्मिक भोली-भाली जनता को फंसाने के लिये कुछ चतुर पुरुषों के द्वारा घड़ा जाल ही पंचांग है।' आज न्यूनातिन्यून सारे भारतवर्ष में 300 के लगभग पंचांग बनते होंगे। इनमें से विज्ञान के अनुकूल, सृष्टि से सामंजस्य रखने वाले दो-चार पंचांग तो हो सकते हैं, शेष नहीं हैं। ऋषि दयानन्द के अनुयायी पंचांग को अपनाते हैं या नहीं? अपनाते हैं। निश्चित ही अपनाते हैं और अपनाना पड़ता है। जिसको अपनाते हैं, क्या वह पंचांग सृष्टि के साथ सामंजस्य रखने वाला भी होता होगा?। क्या उसमें अंधविश्वास नहीं होते होंगे? क्या उसमें सृष्टि के साथ सामंजस्य रखने वाले यथार्थ नक्षत्र, तिथि, पर्वो का उल्लेख होता होगा? नहीं, कदापि नहीं। आइए, अब एक ऐसा पंचांग बना है जो कि इन सब दोषों से मुक्त है। सब आवश्यक अंशों से पूर्ण रूप से युक्त ही नहीं सृष्टि से सामंजस्य भी रखता है। यथार्थ मास, तिथि, नक्षत्रादि से सुसज्जित भी है। जिसके अनुसार पर्व, संस्कार, यज्ञादि शुभ कार्य यथावत सम्पन्न होते हैं। इस तिथि पत्रक के निर्माता ज्योतिष पर अधिकार रखने वाले अधिकारी विद्वान हैं। वे स्वयं गणित करके इसे बनाते हैं। अन्धानुकरण करके किसी पंचांग से लेकर नहीं बनाते। आपसे मेरा अभी कोई पांच वर्ष पूर्व परिचय हुआ था। मैंने उनको अधिकारी जानकर तिथि पत्रक बनाने के लिये प्रेरित किया। मैं स्वयं चाहता हूँ कि सृष्टि के साथ सामंजस्य रखने वाला व वैदिक परम्परा के अनुकूल तिथि पत्रक बने। संयोग से सत्य के प्रेमी, दार्शनेय लोकेश (सी-276, गामा-1, ग्रेटर नोएडा-201310) नामक ज्योतिर्विद इस कार्य में आगे आये हैं।

यह सत्य है कि ऊपर संकेतित लक्षणों से युक्त शुद्ध तिथि पत्रक बनाने वाला ऋषि दयानन्द का कोई भक्त नहीं दिख रहा है। मैं तो वर्तमान पंचांग के दोषों से बचता हुआ प्रयोजन सिद्ध कर लेता हूँ। मुझे भगवान ने पंचांगों के दलदल से बचने की विद्या दी हुयी है। यह ज्योतिर्विद से भिन्न व्यक्ति के पास हो नहीं सकती। किन्तु अन्य लोग कैसे बचेंगे? यदि इस तिथि पत्रक को अपनाकर लाभ प्राप्त नहीं करेंगे तो हमारा सारा कर्मकाण्ड यथोचित न होगा। इससे कोई नहीं बच सकता। असत्य को छोड़ने के लिये अन्यों को उद्यत रखने के लिये कहने वाले ऋषि दयानन्द के भक्त स्वयं असत्य का अनुसरण कर रहे होंगे। कुल मिलाकर यह आर्ष तिथि पत्रक सभी सत्य प्रेमियों खासकर ऋषि दयानन्द के भक्तों के लिये बड़े ही सौभाग्य की बात है। मैं चाहूंगा कि ऋषि भक्त व शास्त्र एवं सत्य के सभी पक्षधर विद्वान इस तिथि पत्रक को निर्द्वन्द होकर अपनायें। इससे पूर्ण लाभ उठायें। इस अभूतपूर्व प्रयास के प्रणेता विद्वान ज्योतिर्विद, आचार्य दार्शनेय लोकेश का पूर्ण उत्साहवर्द्धन करें। उनको हर सम्भव सहयोग करें तथा प्रेरित करें कि वे इस प्रकार का पंचांग बनाते रहें। हम ऋषि दयानन्द के अनुयायी पंचांगों को दोषमुक्त मानते हैं तथापि ज्योतिर्विद्या को न जानने के कारण उन्हीं पौराणिक बन्धुओं द्वारा निर्मित पंचांगों का आश्रय लेते हैं। वास्तव में परमुखापेक्षी हैं। पंचांगों में विद्यमान दोषों से युक्त ही होते जा रहे हैं, मुक्त नहीं। हमारे पास मुक्त होने के (ज्यातिर्विद्यादि) साधन ही नहीं हैं।

मैं चाहूंगा कि प्रान्तीय प्रतिनिधि सभायें, हो सके तो सार्वदेशिक सभा इस पंचांग के विषय में सब समाजों का स्वयं मार्गदर्शन एवं प्रेरणा करे। यह नितान्त वैदिक, अस्तु आवश्यक व सर्वथा श्लाघ्य कार्य है। सभी ऋषि दयानन्द भक्त इस अवसर से लाभ उठायें। प्रयत्न पूर्वक पंचांगों के दलदल से उभरें। परमेश्वर इस सत्य को अपनाने के लिये ऋषिभक्तों की आत्मा में सत्य ज्ञान भर दें। इतिशम्।

-आर्यसमाज, बिहारीपुर, बरेली, मो० : ०९७५९५२७४८५

मसाला ही नहीं, औषधि भी है 'हल्दी'

डॉ० बिमला रानी

हल्दी प्रतिदिन घरेलू उपयोग में आने वाली बहुउपयोगी चीज है। इसकी महक मधुर और स्वाद कड़वा होता है। इसे औषधि के रूप में पाचक, रक्तशोधक, एंटीसेप्टिक, स्वप्नदोष निवारक, विषनाशक, चर्मरोगों के उपचार व सौंदर्य प्रसाधनों में इस्तेमाल किया जाता है। हल्दी प्रतिदिन काम में आने वाला मसाला है। साथ ही मांगलिक अवसरों पर घरेलू चिकित्सा पद्धति में हल्दी का योगदान स्मरणीय है। इसके साथ-साथ इसके अनेक लाभ हैं।

1. हल्दी का उपयोग खांसी, प्रमेह, प्रदर, तथा नेत्र रोगों में किया जाता है।
2. हल्दी तथा गुग्गल प्रदर रोग में उपयोगी पाया जाता है।
3. खुजली, दाद, पित्त, फोड़े आदि रक्त विकारों को व चर्मरोगों को दूर करता है।
4. हल्दी मोंच, ऐंठन, चोट, पुराने घाव को ठीक करती है।
5. बिच्छू एवं सांप के काटने पर इसका धुआं दर्द को रोकता है।
6. हल्दी व फिटकरी का चूर्ण कान बहाव में उपयोगी है।
7. शूल लगने व जोंक के काटने पर इसका लेप रक्तस्राव व वेदना को रोकेगा।
8. माथे पर ताजा हल्दी का लेप करने से सिर का दर्द खत्म हो जाएगा।
9. ताजा हल्दी का अचार भी बनाया जाता है।
10. इसका उपयोग सब्जियों व विभिन्न व्यंजनों में मसाले व रंग के रूप में किया जाता है।
11. हल्दी का उपयोग एंटीसेप्टिक व सौंदर्य प्रसाधनों में होता है।
12. इसके तेल का उपयोग संक्रामक रोगों, पीलिया तथा रक्त विकारों में होता है।
13. इसका तेल भूखवर्धक तथा पाचन में सहायक होता है।
14. गुम चोट व शोथ में हल्दी को घी में हल्का गरम करके गुड़ के साथ सेवन करने से लाभ होता है।
15. प्रसव के बाद हल्दी, सोंठ, पीपली, अजवायन को गाय के घी के साथ लड्डू तैयार कर, प्रसूता को दूध के साथ देने से शरीर का दर्द, वात, रक्त विकार ठीक होता है।
16. हल्दी का चूर्ण दही या मट्ठे के साथ सेवन करने से खून की कमी पूरी होती है।

महिलाएं इसे घर के आंगन में कच्ची जगह पर मार्च-अप्रैल में उगा सकती हैं। यदि पानी की कमी है, तो इसकी बुआई जुलाई के प्रथम पखवाड़े में करनी चाहिए। बुआई के 7 से 10 महीने बाद इसकी पत्तियां सूखकर जमीन पर फैल जाती हैं। इस समय उनको काटकर वाष्पन विधि द्वारा तेल निकाल लेना चाहिए। हल्दी के कंदों को निकालने के लिए कस्सी से खोदना चाहिए। बाद में कंदों को हाथ से इकट्ठा करके साफ करके सुखा दें। इसको उगाने की विस्तृत जानकारी लेने के लिए महिलाएं विश्वविद्यालय के औषधीय व सगंध पौध विभाग, कृषि महाविद्यालय से संपर्क कर सकती हैं।

●बिमला चैरिटी अस्पताल, बुलन्दशहर

गुरुमंत्र

पं० महेन्द्र सिंह आर्य

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात॥

बहनों व भ्राताओं!

यह मंत्र संसार के सब गुरुमंत्रों का गुरुमंत्र है। इस गुरुमंत्र की बराबरी संसार का कोई गुरुमंत्र नहीं कर सकता। क्योंकि इस गुरु मंत्र का सृष्टा, दृष्टा, व नियन्ता आप सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, निर्विकार, सर्वज्ञ, अनन्त, अनादि, अनुपम, एक रस ज्ञान का स्वामी, दयालु, सृष्टिकर्ता, संसार का कर्ता, भर्ता, हर्ता, सर्वव्याप्त, नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव, सब सुखों का दाता, सर्वत्र प्राप्त होता, वेदज्ञान का दाता, जो जीवों को उनके कर्मों के आधार पर उनको शरीर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि पदार्थों का देने वाला सर्वव्यापक, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी, न्यायकारी, सर्वशक्तिमान, सर्वनियन्ता, सबका उत्पादक, माता-पिता, गुरु, राजा, सर्वन्यायाधीश, जो जन्म व मृत्यु को कभी प्राप्त नहीं होता। जो नाड़ी-बन्ध न में कभी नहीं आता, जो संसार के किसी पदार्थ का भोग नहीं करता और क्षमादि गुणों से रहित (किसी को माफ नहीं करता) जो सृष्टि का निमित्त कारण आदि उपरोक्त गुणों से युक्त है, वह गायत्री गुरुमंत्रों के उपासक का रक्षक आप ओ३म् है।

अन्य संसार में प्रचलित सभी गुरुमंत्रों के सृष्टा। अल्पज्ञ, देहधारी, दुखी, परतंत्र, पराश्रित, वेद-निन्दक, मरकर अपने कर्मों का फल ओ३म् से पाने वाले अपने-अपने मंत्रों के निर्माता तो हैं, पर नियन्ता नहीं। क्योंकि संसार के अन्दर सर्वगुण सम्पन्न केवल एक ओ३म् है। हम सब जीवात्मा और संसार की समस्त रचना सामग्री अर्थात् संसार का उपादान कारण सब उसके अधीन है। गायत्री गुरुमंत्र सत्यता पर आधारित है, इसलिए इस सत्य को किसी से छिपाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आज नकली मनघड़न्त कपोल कल्पित, तथाकथित अपनी पूजा के लिए गुरुमंत्रों को छिपाकर डराकर मंत्र देने का प्रचलन धर्म के दुश्मनों ने चला दिया है। छिपाया अपनी कमजोरियों, कमियों व कुकर्मों को जाता है। गलत व्यक्ति को अपनी पोल खुलने का भय हर वक्त सताता रहता है। अपने अच्छे कर्मों को सब मनुष्य बताना चाहते हैं, क्योंकि उससे गौरव की प्राप्ति होती है। अर्थात् सत्य को छिपाने की कोई आवश्यकता नहीं है, और जिसको छिपाने की आवश्यकता है, वह सत्य नहीं है।

सब मनुष्य अर्थात् स्त्री, पुरुष, बच्चे, युवा व वृद्ध इस गुरुमंत्र का जप कर सकते हैं। जो इस गुरुमंत्र का जप अर्थानुकूल आचरण से करते हैं, उनके सब दुख-दरिद्रता समाप्त हो जाते हैं। क्योंकि जप के प्रभाव से (ओ३म्) आत्मा में सत्य, पुरुषार्थ, पराक्रम, निरालस्यता और विज्ञानादि गुणों की उत्पत्ति कर देता है, जिससे सुख साधनों की प्राप्ति हो जाती है।

गुरुमंत्र जप करने की विधि :

जब आप जप करना चाहते हैं, तो प्रातः व सायंकाल स्नान या मुख-हाथ धोकर किसी एकान्त स्थान में जाकर जहां पर शुद्ध वायु आती और जाती हो, किसी साफ आसन पर बैठकर लम्बे-लम्बे श्वांस लेते रहें। कम से कम दो बार और अधिक से अधिक सामर्थ्यानुसार गुरुमंत्र का जप व अर्थ विचार करें। निरंतर जप से सफलता सिद्ध हो जाती है।

-महर्षि दयानन्द वेद संस्थान, आर्य तीर्थ स्थान, बम्बावड, (गौतमबुद्धनगर) उ.प्र.

अन्तर्राष्ट्रीय आर्यमहासम्मेलन 'डरबन' (द0 अफ्रीका) के आर्य इतिहास के झरोखे से..

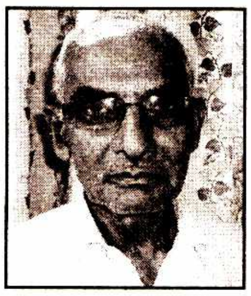

डॉ0 सीताराम शर्मा 'बन्धु'

एक अनुभूमिका..... आर्य कहीं बाहर से नहीं आये थे, अपितु यहीं के मूल निवासी थे। यह अलग बात है कि कुछ पाश्चात्य और कुछ उनके द्वारा शिक्षा प्राप्त यहां के विद्वान भारत के मूल निवासी कोल एवं द्रविड को ही मानते हैं।

यदि आर्य कहीं बाहर से आये होते, तो क्या वे विश्व के प्राचीनतम् साहित्य वेदों में बाहर से आने का अपना वर्णन न करते? मि0 मूर जो पहले आर्यों के बाहर से आने के पक्षधर थे, आर्य साहित्य को पढने के उपरान्त वे स्वयं कहते हैं। "जहां तक मुझे ज्ञात है संस्कृत की किसी पुस्तक अथवा किसी प्राचीन पुस्तक के हवाले से यह बात सिद्ध नहीं हो पाती कि भारतवासी किसी अन्य देश से आये।"

None of the Sanskrit books not even the most ancient contain any distinct reference or illusion to the foreign Of the Indians."-by Muir`s Sanskrit text book, vol. II, page 323.

यदि इस देश के निवासी कोल भील और द्रविड होते तो क्या वे इस देश का कोई अन्य नाम न रखते? आर्यावर्त एवं भारतवर्ष या ब्रहमावर्त आदि से कोई प्राचीन नाम नहीं मिलता। आर्य ही यहां के मूल निवासी थे। इससे पहले यहां कोई नहीं रहता था।

आर्यों की उत्पत्ति हिमालय के मानस स्थान पर हुई मानी जाती है। यहीं से हरिद्वार होकर नीचे आये। सरस्वती नदी से लेकर पूर्व की गंडकी नदी तक 'जिसको सदानीरा एवं द्रश्द्वती भी कहते हैं, आर्यों ने आबादी की। 'विशाल क्षेत्र होने के कारण पुराणों तथा स्मृतियों में इस क्षेत्र के भिन्न भिन्न नाम दिये गये हैं। पुराण इस क्षेत्र को क्षेत्रीय नामों से सम्बोधित करते हैं तो मनुस्मृति में मनु इस क्षेत्र को आर्यावर्त, ब्रह्मावर्त, ब्रह्मऋषि देश, मध्यदेश, एवं यज्ञदेश कहते हैं। बंगाल की खाड़ी से अरब सागर तथा हिमालय और विंध्य गिरि के मध्य स्थित क्षेत्र आर्यावर्त है। मनुस्मृति। 2,22।। "..यदि इससे पहले यहां कोई बस्ती होती तो आर्यों को जंगल जलाकर एवं काटकर क्यों साफ करने पड़ते? "तर्हि विधेयो मायव आस सरसत्या ग्वंग सतत एवप्रांग दहन्त भीयिमां पृथ्वी तं गोतमस्य राहूगणों विदेधश्च माधवः पश्चाद हन्तंमन्वीयतुः। स इमाः सर्वा नदीरतिददाह, सदानीरेत्युत्तराद्गिरेनिर्धावति ताग्वंगहवै नाति ददाहताग्वं हस्मतां पुरा ब्राह्मण नतरन्त्यनति दग्धानाम वैश्वानरेणेति। "शतपथ ब्राह्मण।" 1.4.1 समय-समय पर यहीं से आर्यों ने विभिन्न स्थानों पर गमन किया । जैसे....1 पश्चिमी एशिया 2.उत्तरी एशिया 3. पूर्वी एशिया 4.दक्षिणी एशिया 5. अफ्रीका खण्ड 6. योरोपखण्ड 7. आस्ट्रेलिया खण्ड 8. अमरीका खण्ड ।। आर्यों के बाहर या विदेश जाने के प्रमुख कारणों में धर्म प्रचार, व्यापार, शासन, सभ्यता, आचार-प्रचार आदि सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त आर्यों ने अपने आर्यत्व को पवित्र बनाये रखने के लिए जो भी आर्यत्व की कसौटी से नीचे आया उसको तुरन्त अनार्यत्व प्रदान कर अनार्य घोषित कर दिया। और घोषित ही नहीं किया, उन्हें जंगलों में रहने के लिये विवश कर दिया। मनु स्मृति में इन कठोर नियमों को देखा जा सकता है। वेदाध्ययन न करने वाला ब्राह्मण शूद्र है, संध्या न करने वाला शूद्र है।

यदि कोई अनुलोम, प्रतिलोम से संतान उत्पन्न करता है तो वह चतुर्वर्ण के अंतर्गत न आवे। माता, पिता, आचार्य, एवं माननीयों की अवज्ञा करे तो उसे समाज से निकाल दिया जाय।इस प्रकार समाज की शुद्धि 'एवं आर्यत्व के स्थायित्व हेतु अनेकों युक्तियों के द्वार खुल गये। नियम भंग करने वालों को चुन-चुन कर जाति और समाज से बाहर निकाल दिया गया। नियम भंग करने वाला मूर्ख अनाचारी चाहे कोई ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो या वैश्य, तुरन्त जाति बहिष्कार के योग्य हो जाता था। प्रायश्चित ,जेल एवं जुर्माने भी किये जाते थे। आर्य बनाने का प्रयास प्रायः नहीं किया गया। परिणाम यह हुआ कि जो जाति और जो समाज आर्य था वह दस्यु, दास, राक्षस, असुर, महिस, कपि, मृग, नाग आदि नाम वाची हो गयी। आदि सृष्टि में सर्वगुणों से युक्त आर्य जाति का जन्म हुआ था। इसी से मूर्खों और असभ्यों ने निकल-निकल कर दस्यु और मूर्ख एवं राक्षसादियों की उत्पत्ति की। मनु स्मृति के अनुसार जो क्षत्रि ब्राह्मणों के पास न पहुंच सके वे क्रिया लुप्त होकर पतित हो गये। ये पतित होकर पोंड्र, झोंड्र, द्रविड, कम्बोज ,पारद, खश, पल्हव, चीन, किरात, भल्ल, मल्ल, दरद और शक नामधारी अनार्य जाति के होगये। महाभारत में कथा आती है...राजा हरिश्चन्द्र के बाहु नाम का सातवां वंशज हुआ।वह हैडा एवं ताल जंघा नाम के प्रसिद्ध राक्षसों से पराजित हुआ और अपनी पत्नी सहित जंगल को भाग गया। उससे सगर उत्पन्न हुआ। सगर ने अपने पिता के शत्रु शक,यवन, कम्बोज ,कोल केरल आदि को जीतकर उनका समूल नाश करना चाहा परन्तु अपने गुरु वसिष्ठ के आदेशानुसार उन सबको वेदभ्रष्ट करके दक्षिण के जंगलों में भेज दिया।

अपने को श्रेष्ठ रखने के लिए आर्य क्षत्रियों ने आगे चलकर और अधिक कठोर कदम उठाये। नहुषके पुत्र ययाति ने अपने पांचो पुत्रों में से तुर्वसु से युवा अवस्था मांगी। उसने इंकार कर दिया। इससे क्रोधित होकर नहुष ने उसको सपरिवार जाति भ्रष्ट करके जहां मांसाहारी पशु वृत्ति वाले म्लेच्छ रहते थे उस दिशा को भेज दिया। ब्राह्मणों में भी जाति बहिष्कार हुआ जैसे विश्वामित्र ने कहीं से एक लड़का लाकर अपने सौ पुत्रों (शिष्यों) में सर्वश्रेष्ठ ठहराया। परन्तु पचास पुत्रों ने पिता की इस बात को नहीं माना, इसलिये विश्वामित्र ने क्रोधित होकर उन्हें दक्षिण दिशा में निकाल दिया। ये ही सब पुड़,शवर, पुलिन्द आदि राक्षस होगये। "तस्यविश्वा मित्रस्यैकशतपुत्रा आसु पंचशदेव ज्यायांसो मधुछंदसः।पंचाशद कनियांसतत्ये ज्यायांसो नते कुशलं मेनिरे................विश्वामित्रा दस्युनां भूयिस्ठाः।। "ऐतरेय ब्राह्मण 7.4. 18 ये अनार्य ही फिर आर्यों से लड़े और पराजित होकर अन्य देशों को चले गये। आन्ध्र लोग आंध्रालय' (आस्ट्रेलिया) के झल्ल लोग अफ्रीका में जूलू हो गये। चीनी लोग किरात बलूचिस्तान में तथा नट, कंजर, बेडिया आदि बहुत सी जातियां इसी देश के जंगलों में रह गयीं। अफ्रीका खण्ड में मिश्र देश है। इसे इजिप्ट भी कहते हैं। यहां की सभ्यता बहुत पुरानी है। दक्षिण एशिया के इतिहास से ज्ञात होता है कि मिश्र निवासी भारतीय ही हैं। फारस, अरब, मैसोपोटामिया, जुडिया अबेबिलन, चाइल्डिया एवं फिनीशिया में आर्य ही निवास कर रहे हैं। ब्रास्य क्षत्री झल्ल होकर के अफ्रीका गये, जहां वे जूलू हो गये। ऐतरेय ब्राह्मण के 39 अध्याय के अन्त में वर्णन आता है, जिससे उक्त कथन की पुष्टि होती है। वर्णन इस प्रकार है "हिरण्येन परिवृत्तान कृष्णान शुक्लदतो मृगान्। मष्णारेभरतो अददातच्छतं वद्वानि सप्तच।" इसमंत्र पर सायणचार्य कहते हैं"मृगशब्देन गजाः विवक्षिताः तेच गजाहिरण्येन परिवृताः सर्वाभरणयुक्ताः कृष्णाः शुक्लाभ्यां दंताभ्यां तादृशान गजान् मस्णार नामके देशे भरतो राजा दत्तवान।शतं इत्यादि तत्शंख्योच्यते। वद्वयं वृंदमित्येतौ पर्यायौ। वद्वानी सप्ताधिकयशत संख्यकानि तावतौ गजान् दत्तवतित्यर्थः।" अर्थात् दुष्यंत के पुत्र राजा भरत ने मष्णार नामक देश में सुवर्णअलंकारों से युक्त बड़े-बड़े श्वेत दांतवाले हाथियों के एक सौ सात वृन्द दान में दिये। अब देखना यह है कि यह मष्णार देश है कहाँ? यह निश्चित रुप से दक्षिणी अफ्रीका में है। इसका प्रमाण इस प्रकार है। In southern Rhodesia which incudes both mastabole land and masna land extensive gold fields have Remarkable ruins of stone-built fortifications and temples, curiously carved and containing evidence that the builders worked in gold,are scattered over the plateau.They point to the early possession of the country by a civilised people.Elephants once very plentiful throughout the greater portion of Rhodesia had become so much reduced in numbers by constant hunting and the indiscriminate slaughter of females and calves as well as males. **

-The inter Geography by seventy Authors,pp. 1000 and 1001.

इस प्रकार दक्षिणी अफ्रीका में बहुतकाल पहले ही आर्यों का जाना सिद्ध है। अफ्रीका महाद्वीप में आज भी दक्षिणी अफ्रीका प्रमुख सोना उत्पादक देश है। डरबन यहां के प्रमुख व्यापारिक बन्दरगाहों एवं नगरों में से एक है। दक्षिणी अफ्रीका संघ का यह तीसरा बन्दरगाह है। यह जोहान्सवर्ग नगर के 11 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। प्रशासनिक नगर के रुप में इसका विकास किया गया है। हीरे की खानें भी यहां पर हैं।

विवेक सदन, खत्री कूंचा-2 जट बाजार, अमरोहा

योगिराज श्रीकृष्ण महाराज का संदेश

श्रद्धानन्द योगाचार्य, कायमगंज

जब-जब धर्म की हानि होती है तब-तब मैं धर्म की स्थापना के लिये बारम्बार जन्म लेता हूँ। इससे सिद्ध होता है कि उनकी धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा थी, किन्तु अब धर्म की जय बोलकर भी अधर्म में श्रद्धा हो गयी है यही सबसे बड़ा विनाश का कारण है। श्रीकृष्ण जी शान्ति प्रस्ताव लेकर दुर्योधन के पास जाते हैं- तब वह कहता है कि मैं धर्म को जानता हूँ किन्तु धर्म में मेरी प्रवृत्ति नहीं है इसलिए मैं आपके शान्ति प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकता। तब श्रीकृष्ण जी उसका भोजन भी स्वीकार नहीं करते और विदुर के यहां सादा भोजन करते हैं। किन्तु आज जो शराब आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन कराता है उसी को ही वोट दिया जाता है इसीलिए अधर्म राज्य की स्थापना हो रही है। इतना ही नहीं लाइसेंस देकर पशु वध किया जाता है जबकि श्रीकृष्ण जी ने गाय के वंश की रक्षा करने का संकल्प उठाया था। जिसको आज 800 सांसद 3000 विधायक भी नहीं उठा पा रहे हैं।

भजनोपदेश हेतु सम्पर्क करें
पं. उमेश आर्य भजनोपदेशक
शिव कालोनी, गोविन्दगढ़, अलवर (राजस्थान)
मोबाइल नं0 - 09928437044, 08233140740
देशभर में वेदप्रचार तथा भजनोपदेश हेतु हमारी सेवाएं मण्डली सहित उपलब्ध हैं। वार्षिक उत्सव, वेदप्रचार सप्ताह, बोध सप्ताह तथा अन्य महत्वपूर्ण अवसरों पर सेवा का अवसर दें। धन्यवाद,

अनुष्ठान हेतु सम्पर्क करें
वेदप्रचार सप्ताह, वार्षिकोत्सव, यज्ञ-अनुष्ठान, वेदकथा हेतु कम से कम तीन माह पूर्व सम्पर्क करें-
पं. सुनील दत्त शास्त्री
(वैदिक प्रवक्ता)

आर्य समाज मन्दिर, चौक आर्य समाज, फिरोजपुर शहर (पंजाब), पिन- 152002 मोबा. : 9465810156

विकलांग युवक-युवती का विवाह सम्पन्न

राकेश चड्ढा
कोटा (राजस्थान)

आर्यसमाज विज्ञाननगर के सत्संग हॉल में विकलांग युवक व युवती का विवाह संस्कार कराया गया।

विकलांग युवक जगदीश लालवानी, भावनगर (गुजरात) निवासी, तथा युवती जयवन्ती पंजवानी का विवाह संस्कार पुरोहित पण्डित बिरधीचन्द शास्त्री ने सम्पन्न कराया।

इस अवसर पर आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने नव दम्पत्ति को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया। श्री चड्ढा ने इस अवसर पर नव दम्पत्ति को आशीर्वाद देते हुए कहा कि असक्षम से सक्षम बनकर अन्यों को शिक्षित व स्वावलम्बी बनने को प्रोत्साहित करें। जरूरतमंद कमजोर आय वर्ग के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दें। इस अवसर पर नवयुगल के दोनों ओर से परिवारीजन उपस्थित थे।

वैदिक विद्वान पं० रामफल सिंह द्वारा नवीन आर्यसमाज की स्थापना

सत्यप्रकाश शर्मा
बिलासपुर (हि०प्र०)।

आर्यसमाज सुन्दरनगर कालोनी के विद्वान प्रधान एवं आर्य वीर दल हिमाचल प्रदेश के प्रान्तीय संचालक रामफल सिंह आर्य द्वारा गांव छात (बरठी), तहसील- घुमारवीं, जि० बिलासपुर (हि०प्र०) में आर्यसमाज की स्थापना गत 30 जून को की गयी।

उक्त जानकारी देते हुए सत्यप्रकाश शर्मा ने बताया कि इस गांव में सात्विक वृत्ति के सुयोग्य होनहार युवक राजकुमार का इस कार्य में अति सराहनीय योगदान रहा। सर्वप्रथम गांव के राजकीय उच्च विद्यालय के प्रांगण में यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

वार्षिकोत्सव ३० से

वेदपाल सिंह आर्य
करनपुर माफी, अमरोहा।

आर्यसमाज करनपुर माफी का वार्षिकोत्सव 30 अक्टूबर से। नवम्बर तक बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा।इस अवसर पर स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती- गुरुकुल पुष्पावती, स्वामी शिवानन्द सरस्वती- दादरी, आचार्य प्रमोद- पसवाड़ा, महाशय उदयवीर भजनोपदेशक- मथुरा, महाशय सन्तराम भजनोपदेशक, सीता आर्या भजनोपदेशिका, कु० वन्दना आर्या- रानापुर, स्याना आदि विद्वान व भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

'भजन-भास्कर' का विमोचन

जींद (हरियाणा)। आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० चन्द्रभान आर्य (सम्पादक- शांतिधर्मी) की पुस्तक 'भजन-भास्कर' का विमोचन जिला जींद के आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम में किया गया।

ज्ञातव्य है कि इस पुस्तक का प्रकाशन हरियाणा साहित्य अकादमी के सहयोग से हुआ है। हरियाणा के इतिहास में यह पहला अवसर है, जब किसी आर्य भजनोपदेशक की पुस्तक के लिए हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा अनुदान दिया गया है। यह समस्त आर्यजगत् के लिए गर्व का विषय है। पं० चन्द्रभान आर्य 1951 से भजनोपदेशक के रूप में, और 1998 से शांतिधर्मी के संपादक व प्रकाशक के रूप में आर्यजगत् की सेवा कर रहे हैं। पुस्तक का विमोचन जयवीर आर्य अतिरिक्त उपायुक्त आदि ने किया। इस अवसर पर आचार्य राजेन्द्र, स्वामी सोमानन्द, ओम कुमार आर्य, श्रीचन्द जैन, मा० कपूर सिंह आर्य सहित सैंकड़ों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

प्रथम पृष्ठ का शेष : आर्यसमाज का अन्तर्राष्ट्रीय...

किया। महशय धर्मपाल ने इस संबंध में अपनी बात रखते हुए कहा कि मैं बहुत लम्बे समय से ऐसे प्रशिक्षण केन्द्र की बात को विचार रहा हूं, तथा इसकी बनने वाली प्रस्ताव समिति की अध्यक्षता स्वीकार करता हूं।

इस अवसर पर सभा उपप्रधान सुरेश अग्रवाल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य, उड़ीसा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, बिहार सभा के मंत्री रामेन्द्र गुप्ता, महाराष्ट्र के ब्रह्ममुनि, दयाराम बसैए, झारखण्ड प्रतिनिधि सभा के प्रधान भारतभूषण त्रिपाठी, छत्तीसगढ़ के प्रधान आचार्य अंशुदेव, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान देवेन्द्रपाल वर्मा, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल, व उत्तराखण्ड प्रतिनिधि सभा के प्रधान हजारीलाल अग्रवाल आदि ने हरसंभव सहयोग देने का आश्वासन दिया।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ एवं निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर

दर्शन कुमार अग्निहोत्री
बहादुरगढ़ (हरियाणा)

आत्मशुद्धि आश्रम का 47वां स्थापना दिवस वार्षिकोत्सव समारोह पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी, मुख्याधिष्ठाता, आश्रम ध्यान योग निर्देशक एवं प्रवक्ता- आचार्य राजहंस मैत्रेय के सान्निध्य में 21 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक मनाया जाएगा, जिसमें ऋग्वेद पारायण यज्ञ एवं निःशुल्क ध्यानयोग विज्ञान शिविर का आयोजन किया जाएगा।

शिविर में आसन-प्राणायाम प्रशिक्षण योगनिष्ठ सत्यपाल वत्स द्वारा होगा। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य विद्यादेव (पूर्व आचार्य, टंकारा)होंगे तथा मुख्य यजमान होंगी प्रीति देवी व मूर्तिदेवी। मुख्य वक्ता डॉ० मुमुक्षु आर्य (नोएडा), आचार्य खुशीराम, पं० रामजीवन योगाचार्य, आर्य तपस्वी सुखदेव वर्मा (दिल्ली), स्वामी रामानन्द सरस्वती, आचार्य रवि शास्त्री होंगे। वेदपाठ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा किया जाएगा। कार्यक्रम में सत्यपाल मधुर, पं० रमेशचन्द्र आर्य, रामदुलारी बंसल द्वारा भजनोपदेश होंगे। कार्यक्रम में प्रातः 5 से 6 बजे तक ध्यान, 6 से 7 बजे तक यौगिक क्रियाओं का प्रशिक्षण, 8 से 11 बजे तक यज्ञ, भजन, उपदेश; व शाम को 3 से 6 बजे तक यज्ञ, भजन, उपदेश, तथा रात्रि 8 से 10 बजे तक भजनोपदेश और व्याख्यान तथा धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन होगा। आर्य महिला जागृति सम्मेलन 30 सितम्बर को सायं 3 बजे, योग सम्मेलन 1 अक्टूबर को प्रातः 10 बजे, व चरित्र निर्माण सम्मेलन सायं 3 बजे होगा।

2 अक्टूबर को यज्ञ पूर्णाहुति 9 बजे के पश्चात् पूज्य आत्मस्वामी जन्मोत्सव एवं आश्रम स्थापना दिवस समारोह मनाया जाएगा। आश्रम के पदाधिकारियों ने बन्धुओं, साधकों, याज्ञिकों से भारी संख्या में पधारने की अपील के साथ कहा है कि व्यक्तिगत यजमान बनने के इच्छुक महानुभाव शीघ्र ही अपना नाम यजमान सूची में लिखवाएं। सम्पर्क सूत्र है- 01276-230195, 09416054195

२०१४ में होगी शताब्दी उत्सव ४ से

शमसाबाद (आगरा)। आर्यसमाज का 99वां वार्षिकोत्सव 2 से 4 अक्टूबर तक मनाया जाएगा, जिसमें डॉ. निष्ठा (कानपुर), आचार्या दत्ताचार्या, शिवपाल जी, सावित्री देवी (गाजियाबाद) के प्रवचन व भजन होंगे। वर्ष 2014 में समारोह पूर्वक शताब्दी भी मनायी जाएगी।

श्रावणी पर्व सम्पन्न

दिल्ली। आर्यसमाज राजेन्द्रनगर में 24 से 28 अगस्त तक अथर्ववेदीय वृहद् यज्ञ के साथ श्रावणी पर्व सोल्लास सम्पन्न हुआ। आचार्य अंकित शास्त्री के सुमधुर भजन एवं वैदिक विद्वान आचार्य कैलाश चन्द्र शास्त्री के वेदोपदेश हुए।

वार्षिकोत्सव २३ से

दिल्ली। आर्यसमाज, विशाखा एन्क्लेव, उत्तरी प्रीतमपुरा का 26वां वार्षिकोत्सव व वेद प्रचार सप्ताह 23 से 28 सितम्बर तक धूमधाम से मनाया जाएगा। मंत्री ओमप्रकाश गुप्ता के अनुसार इस अवसर पर 21 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। समारोह में अनेक सम्मेलनों के साथ ही वृद्ध आर्यजनों का सम्मान भी होगा। पं० सत्यपाल पथिक के भजन व डॉ० सोमदेव शास्त्री के प्रवचन होंगे।

हार्दिक श्रद्धांजलि

विजयपाल सिंह को पत्नी शोक

बड़ौत। आर्यसमाज बड़ौत (बागपत) के सदस्य कर्मठ आर्य समाजी, आर्यसमाज एवं वेदों में अटूट विश्वास रखने वाले ई. विजयपाल सिंह की धर्मपत्नी डॉ. वीरवाला का 67 वर्ष की आयु में 31 अगस्त को देहान्त हो गया। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में अपने पति के साथ सदैव सक्रिय रहीं।

सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा के पारितोषिक वितरित

सोनीपत। ऋषिकृत ग्रन्थों, विद्वज्जनों की पुस्तकों के स्वाध्याय से जहां मनुष्य अपने सर्वांगीण विकास के मार्ग खोलता है, वहां अपनी विश्वगुरु वैदिक संस्कृति से परिचित होकर देश, धर्म, जाति की सेवा में तत्पर भी होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती विरचित अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के स्वाध्याय की जनसामान्य विशेषतया युवा वर्ग की रुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से जिला वेद प्रचार मण्डल ओर से प्रान्तीय स्तर पर सोनीपत, फरीदाबाद, गुड़गांव, रोहतक, हिसार, करनाल के विभिन्न छः केन्द्रों पर इस परीक्षा का आयोजन किया गया। 14 जुलाई को आर्यसमाज सैक्टर-14 में इन 180 प्रतिभागी महानुभावों में से विजेताओं को पुरस्कृत करने के लिए पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित किया गया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव के सान्निध्य में इन विजेताओं का अभिनन्दन किया गया। 16-25 आयुवर्ग और 26 से अधि क आयुवर्ग के परीक्षार्थियों को पृथक्-पृथक् पुरस्कृत किया गया।

वेद, यज्ञ व योग प्रचार की धूम

यादवेन्द्र शर्मा
ऊधमपुर (जम्मू-कश्मीर)।

आर्यसमाज के तत्वावधान में वेद मन्दिर के साप्ताहिक सत्संग में स्वामी दयानन्द 'विदेह'- संस्थापक ओम साधना मण्डल (करनाल एवं नई दिल्ली) ने 'निर्भयता' विषय पर सारगर्भित 'यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु' मंत्र के आधार पर प्रेरणादायक, उत्साहजनक भाषा में उपदेश किया। इसके पश्चात् गायत्री मंत्र तथ संध्या के मंत्रों पर महात्मा रसीलाराम वानप्रस्थ आश्रम में सरल ढंग से प्रकाश डाला। इस अवसर पर महात्मा रामभिक्षु के अनुभवपूर्ण विचारों से प्रेरित विद्यार्थियों को उद्बोधन मिला।

आर्यों के तीर्थ
दयानन्द मठ, दीनानगर
जिला गुरदासपुर (पंजाब)
को स्थापित हुए 75 वर्ष होने पर
हीरक जयन्ती समारोह
18 से 20 अक्टूबर, 2013
आप सब महानुभाव सादर आमंत्रित हैं।
निवेदक :- स्वामी सदानन्द सरस्वती
अध्यक्ष : दयानन्दमठ, दीनानगर एवं समस्त परामर्श समिति
सम्पर्क :- 01875-220110, 094782-56272, 094172-20110

आर्यसमाज व पंजाबी जनसेवा समिति द्वारा निर्धन बच्चों में खाद्य सामग्री वितरित करने का दृश्य- केसरी।

गरीब बच्चों को खाद्यसामग्री वितरित

कोटा। आर्य समाज व पंजाबी जनसेवा समिति के कार्यकर्ता वीर सावरकर नगर कच्ची बस्ती में पहुंचे और वहां रह रहे निर्धन परिवारों के बच्चों को एकत्रित कर, उनमें खाद्य सामग्री का वितरण किया गया।

बच्चों के बीच बैठकर आर्य समाज के विद्वान अग्निमित्र ने गायत्री मंत्र का पाठ कराया। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि बच्चों में निश्चलता व निर्मलता होती है तथा हमें इनकी सेवा व सहायता कर, शिक्षा के प्रति उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। पंजाबी जनसेवा समिति के अध्यक्ष दर्शन पिपलानी ने कहा कि हम समय-समय पर यहां आकर इन बच्चों के बीच खुशियां बांटते रहें।

इस अवसर पर आर्य समाज के राम प्रसाद याज्ञिक, पं. शोभाराम आर्य, पंजाबी जनसेवा समिति के उपाध्यक्ष शम्मी कपूर आदि उपस्थित थे। बस्ती की रेखा ने कहा कि आर्य समाज व पंजाबी समाज द्वारा पिछले कई वर्षों से इन बच्चों में भोजन, वस्त्र व पुस्तकें वितरित की जा रही हैं। उन्होंने श्री चड्ढा जी के दीर्घायुष्य की कामना करते हुए उन्हें हार्दिक बधाई दी।

तुरन्त आवश्यकता है

आर्यावर्त केसरी के लिए कार्यालय अधीक्षक व उप संपादकों की आवश्यकता है। सेवानिवृत्त अथवा अंशकालिक महानुभाव भी सम्पर्क कर सकते हैं-

डॉ० अशोक कुमार आर्य,
प्रधान सम्पादक
05922-262033, 09412139333

धूमधाम से मनाया श्रावणी पर्व

◆ आचार्या अन्नपूर्णा के ब्रह्मत्व में हुआ ब्रह्मयज्ञ

सतीश चड्ढा
दिल्ली

आर्यसमाज कीर्तिनगर में श्रावणी उपाक्रम व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का कार्यक्रम 5 से 15 सितम्बर तक बड़े उत्साह व हर्षोल्लास से डॉ. अन्नपूर्णा जी के ब्रह्मत्व व डॉ. ऋषिपाल शास्त्री के सहयोग से द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल देहरादून की ब्रह्मचारिणियों के सानिध्य में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रभात फेरी निकाली गयी, जिसमें लगभग 200 धर्म प्रेमियों ने भाग लिया। आर्यवीरों ने आर्यसमाज द्वारा दी गयी टी-शर्ट पहनकर भाग लिया।

प्रात:कालीन यज्ञ विभिन्न पार्कों के प्राकृतिक वातावरण में किया गया, जिसमें 34 दम्पत्ति व 21 एकल व्यक्ति यजमान बने। सायंकालीन भजन- अध्यात्मिक दिव्य सत्संग का कार्यक्रम प्रतिदिन आर्यसमाज कीर्तिनगर के भवन में ही आयोजित किया गया, जिसमें गुरुकुल से आयी ब्रह्मचारिणियों ने मधुर, सुन्दर, मनमोहक व लयबद्ध प्रेरणास्पद प्रभुभक्ति से युक्त भजन सुनाए। डॉ. अन्नपूर्णा जी ने प्रतिदिन विभिन्न विषयों पर बड़े ही मोहक व रोचक ढंग से विभिन्न वेदमंत्रों की व्याख्या आर्ष ग्रन्थों व नीतियों, महाभारत व रामायण के उदाहरण के साथ की।

15 सितम्बर को उपाक्रम यज्ञ की पूर्णाहुति कार्यक्रम में 14 यज्ञकुण्डों पर 22 एकल व 44 दम्पत्ति बड़े उत्साहपूर्वक यजमान बने। इस अवसर पर वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार द्वारा यज्ञ व सत्संग के महत्व पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम में उमा वधवा, सुषमा सेठ, सुषमा शर्मा और कविता आर्या द्वारा भजन गायन हुआ। ब्रह्मचारिणियों ने प्रभुभक्ति के मोहक भजन सुनाए। डॉ. ऋषिपाल शास्त्री के उद्बोधन ब्रह्मा डॉ. अन्नपूर्णा के अशीष वचनों द्वारा सभी सदस्यों ने धर्म लाभ प्राप्त किया।

समारोह में रामगोपाल कथूरिया, जगदीश मनचन्दा तथा ठाकुरदास गम्भीर को आर्यसमाज के कार्यों में सदा सहयोग देने हेतु सम्मानित किया गया। प्रधान जी के धन्यवाद और शान्तिपाठ के पश्चात् सभी ने ऋषिलंगर में प्रसाद ग्रहण किया।

आर्यावर्त केसरी

आप ऐसे भी दे सकते हैं हमें सहयोग

१. आर्यावर्त केसरी की वार्षिक सदस्यता हेतु रु० १००/- अथवा अजीवन सदस्यता हेतु रु० ११००/- की सात्विक सहयोग राशि भेजकर।
२. अपने परिजनों, इष्ट मित्रों एवं शुभचिन्तकों को वार्षिक या आजीवन सदस्य बनाकर या उन्हें इस दिशा में प्रेरित करके।
३. किसी महानुभाव, संस्था या संगठन के लिए उसकी सदस्यता राशि स्वयं अपनी ओर से भेजकर।
४. किसी विशेष पर्व, उत्सव, उपलब्धि, जन्मदिवस या वैवाहिक वर्षगाँठ आदि पर अपनी शुभकामनाओं का विज्ञापन देकर।
५. अपने प्रतिष्ठान या संस्थान का विज्ञापन देकर।
६. अपने संस्थान, ट्रस्ट या संगठन के स्थापना दिवस, वार्षिक महोत्सव आदि पर केसरी में विशेष परिशिष्ट का प्रकाशन कराकर।
७. अपने आलेख, विचार, प्रतिक्रिया व संगठन के समाचार भेजकर।
८. आर्यावर्त केसरी के प्रतिनिधि बनकर अथवा किसी भी अन्य रूप में, जैसा आप उचित समझें। आर्यावर्त केसरी को अपना अमूल्य सहयोग दे सकते हैं।

कोटिशः धन्यवाद सहित,

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, प्रधान सम्पादक

आर्यावर्त केसरी
संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी, इशरत अली, राहुल त्यागी
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जेपी नगर
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित
☎:05922-262033, 9412139333 फैक्सः 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
e-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com